BUGHZ V KEENA (HINDI)

बुग़्ज़ व कीना

مکتبۃ المدینہ
(दा 'वते इस्लामी)

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

क़िताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

क़िताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

क़िताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात कम हों** या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह रिसाला "**बुग़्ज़ व कीना**" उर्दू ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी–गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (**INDIA**) की **राष्ट्रिय भाषा** "**हिन्दी**" में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआ़मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराह़िल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :-
(1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्पयूटर तक़ाबुल (4) तक़ाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्पयूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (़) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाइयें।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सह़ीह़ उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में ह़ासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐ़न मुताबिक़ ही **हिन्दी-जोडणी** (spelling) रखी गई है और बत़ौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़तूह़ (ज़बर वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के पहले डेश (-) और साकिन (जज़्म वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है। मषलन **उ-लमा** (عُلَمَاء) में "**-ल**" मफ़तूह़ और **रह़्म** (رَحْم) में "**ह़्**" साकिन है।

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : **दा'वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" और "رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه" वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़-लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद पर दुरूदो सलाम भेजते

शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہَا से रिवायत है : کَانَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ صَلّٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّسَلَّمَ وَ اِذَا خَرَجَ صَلّٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّسَلَّمَ या'नी हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब मस्जिद में दाख़िल होते तो मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (या'नी ख़ुद) पर दुरूदो सलाम भेजते और जब निकलते तो भी मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (या'नी ख़ुद) पर दुरूदो सलाम भेजते।

(سنن الترمذی،کتاب الصلٰوۃ، باب ماجاء مایقول عند دخول المسجد ، ۱/۳۳۹ حدیث۳۱٤ملتقطا)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मस्जिद में दाख़िल होते और निकलते वक़्त भी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम भेजना चाहिये कि येह सुन्नत है, मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : इस से दो मस्अले मा'लूम हुए। एक येह कि मस्जिद में जाते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है। शिफ़ा शरीफ़ में है कि ख़ाली घर और मस्जिद में जाते वक़्त येह पढ़े : ''اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ'' दूसरे येह कि **हुज़ूरे अन्वर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **ख़ुद भी अपने पर दुरूदो सलाम पढ़ते थे** कभी ''صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّسَلَّمَ'' और कभी ''صَلَّی اللّٰہُ عَلَیَّ وَسَلَّمَ'' फ़रमाते।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1/450)

क़ब्र काले सांपों से भरी हुई थी

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमत में कुछ लोग घबराहट के आ़लम में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : हम ह़ज की सआ़दत पाने के लिये निकले थे, हमारे साथ एक आदमी भी था, जब हम ज़ातुस्सिफ़ाह़[1] के मक़ाम पर पहुंचे तो वोह इन्तिक़ाल कर गया। हम ने उस के ग़ुस्ल व कफ़न का इन्तिज़ाम किया फिर उस के लिये क़ब्र खोदी और उसे दफ़्न करने लगे तो देखा कि उस की क़ब्र काले काले सांपों से भरी हुई है। हम ने वोह जगह छोड़ कर दूसरी क़ब्र खोदी तो देखते ही देखते वोह भी काले सांपों से भर गई चुनान्चे, हम ने उसे वहां भी नहीं दफ़्नाया और आप के पास हाज़िर हो गए हैं। हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया :

ذٰلِكَ الْغِلُّ الَّذِیْ تَغِلُّ بِهٖ اِنْطَلِقُوْا فَادْفِنُوْهُ فِیْ بَعْضِهَا

या'नी येह उस का **कीना** है जो वोह अपने दिल में रखा करता था, जाओ ! और उसे वहीं दफ़्न कर दो।

(موسوعة ابن ابی الدنیا،کتاب القبور،٦/٨٣)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सफ़रे ह़ज जैसी अ़ज़ीम सआ़दत से मुशर्रफ़ होने वाले शख़्स को भी सीने के **कीने** की वजह से सांपों भरी क़ब्र में दफ़्न होना पड़ा। मज़कूरा ह़िकायत में हम जैसों के लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है। जिन का ज़ाहिर

---

(1) : एक जगह का नाम है जो मक्कए मुकर्रमा से बाहर यमन की त़रफ़ वाक़ेअ़ है। (فتح الباری،١٣/١٧٦)

बड़ा साफ़ और पाकीज़ा दिखाई देता है मगर बातिन **बुग़्ज़** व **कीने** और त़रह़ त़रह़ की ग़लाज़तों से आलूदा होता है । ज़रा सोचिये ! अगर हमारी क़ब्र में भी इसी त़रह़ सांप बिच्छू आ गए तो हमारा क्या बनेगा ? लिहाज़ा इस से पहले कि सांसों का तसलसुल टूट जाए और तौबा की मोहलत भी न मिले । आइये ! हम बारगाहे ख़ुदावन्दी में अपने गुनाहों से तौबा कर लेते हैं और अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करते हैं कि

सांप लिपटे न मेरे लाशे से क़ब्र में कुछ न दे सज़ा या रब्ब
नूरे अह़मद से क़ब्र रोशन हो वह़शते क़ब्र से बचा या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 88)

हम क़हरे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार से उस की पनाह के त़लबगार हैं ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बातिनी गुनाहों का इलाज बेहद ज़रूरी है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुछ गुनाहों का तअ़ल्लुक़ ज़ाहिर से होता है जैसे क़त्ल, चोरी, ग़ीबत, रिश्वत, शराब नोशी और कुछ का बातिन से मषलन ह़सद, तकब्बुर, रियाकारी, बदगुमानी । बहर ह़ाल गुनाह ज़ाहिरी हों या बातिनी ! इन का इर्तिकाब करने वाला जहन्नम के दर्दनाक अ़ज़ाब का ह़क़दार है, इस लिये दोनों क़िस्म के गुनाहों से बचना ज़रूरी है लेकिन बातिनी गुनाहों से बचना ज़ाहिरी गुनाहों की निस्बत ज़ियादा मुश्किल है क्यूंकि ज़ाहिरी गुनाह को पहचानना आसान जब कि बातिनी गुनाह की शनाख़्त

इस वजह से दुश्वार है कि येह सर की आंखों से दिखाई नहीं देते इन्हें सिर्फ़ महसूस किया जा सकता है। तक़्वा व परहेज़गारी पाने और अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने के लिये हमें ज़ाहिर के साथ साथ अपना बातिन भी सुथरा रखने की ज़रूर कोशिश करनी चाहिये। बहुत सारे बातिनी गुनाहों में से एक "बुग्ज़ व **कीना**" भी है। इस की तबाह कारियों से बचने के लिये हमें मा'लूम होना चाहिये कि **कीना** किसे कहते हैं? इस के क्या नुक़्सानात हैं? कौन सा **कीना** ज़ियादा बुरा है? इस का इलाज क्यूंकर हो सकता है? किस से **कीना** रखना वाजिब है? हमें ऐसा क्या करना चाहिये कि किसी के दिल में हमारे लिये **कीना** पैदा न हो? ज़ेरे नज़र रिसाला जिस का नाम शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने "**बुग़्ज़ व कीना**" रखा है, इस रिसाले में **कीने** के बारे में इसी नोइय्यत की मा'लूमात फ़राहम करने की कोशिश की गई है, ज़िमनन बहुत से मदनी फूल भी अपनी खुश्बूएं लुटा रहे हैं। इस रिसाले को ख़ूब समझ कर कम अज़ कम तीन मरतबा पढ़िये और अपनी इस्लाह़ की कोशिश में मस्रूफ़ हो जाइये। (शो'बए इस्लाही कुतुब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

गुनाहों ने कहीं का भी न छोड़ा करम मुझ पर ह़बीबे किब्रिया हो
गुनाहों की छुटे हर एक आ़दत सुधर जाऊं करम या मुस्त़फ़ा हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 165)

मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कीना किसे कहते हैं ?

दिल में दुश्मनी को रोके रखना और मौक़अ़ पाते ही इस का इज़्हार करना **कीना** कहलाता है (لسان العرب، ۱/ ۸۸۸) हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने "इह्याउल उ़लूम" में **कीने** की ता'रीफ़ इन अल्फ़ाज़ में की है : قَلْبُہٗ اِسْتِثْقَالُہٗ وَالْبُغْضَۃَ لَہٗ وَالنِّفَارَ عَنْہُ وَ اَنْ یَّدُوْمَ ذٰلِكَ وَیَبْقٰی اَلْحِقْدُ: اَنْ یُّلْزِمَ या'नी **कीना** येह है कि इन्सान अपने दिल में किसी को बोझ जाने, उस से दुश्मनी व **बुग़्ज़** रखे, नफ़रत करे और येह कैफ़िय्यत हमेशा हमेशा बाक़ी रहे। (احیاء العلوم، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، ۳/ ۲۲۳)

मषलन कोई शख़्स ऐसा है जिस का ख़याल आते ही आप को अपने दिल में बोझ महसूस होता है, नफ़रत की एक लहर दिलो दिमाग़ में दौड़ जाती है, वोह नज़र आ जाए तो मिलने से कतराते हैं और ज़बान, हाथ या किसी भी त़रह़ से उसे नुक़्सान पहुंचाने का मौक़अ़ मिले तो पीछे नहीं रहते, तो समझ लीजिये कि आप उस शख़्स से **कीना** रखते हैं और अगर इन में से कोई बात भी नहीं बल्कि वैसे ही किसी से मिलने को जी नहीं चाहता तो येह **कीना** नहीं कहलाएगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुसलमान से कीना रखने का शरई हुक्म

मुसलमान से बिला बजहे शरई **कीना** व **बुग़्ज़** रखना ह़राम है। (फ़तावा रज़विय्या 6/526) या'नी किसी ने हम पर न तो ज़ुल्म किया और न ही हमारी जानो माल वग़ैरा में कोई ह़क़ तलफ़ी की फिर भी हम उस के लिये दिल में **कीना** रखें तो येह नाजाइज़

व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ۞ और अगर किसी ने हम पर कोई ज़ुल्म किया हो या हमारा कोई ह़क़ तलफ़ किया हो जिस की वजह से हम उस से दिल में **कीना** रखें तो येह ह़राम नहीं है ۞ फिर अगर हम उस से बदला लेने पर क़ादिर न हों तो उस से अपना बदला लेने के लिये रोज़े मेह़शर का इन्तिज़ार कर सकते हैं लेकिन दुन्या ही में मुआ़फ़ कर देना अफ़्ज़ल है ۞ और अगर बदला लेने पर क़ादिर हों तो उस से इसी क़दर बदला ले सकते हैं जितना उस ने हम पर ज़ुल्म किया या माल वग़ैरा में हमारी ह़क़ तलफ़ी की है ۞ लेकिन ऐसी सूरत में भी अगर हम उसे मुआ़फ़ कर देंगे तो ज़ियादा षवाब के ह़क़दार होंगे ۞ और अगर मुआ़फ़ करने की सूरत में ख़दशा हो कि उस शख़्स को मज़ीद जुरअत मिलेगी और वोह हम पर या किसी और पर ज़ियादा ज़ुल्म ढाएगा तो ऐसी सूरत में बदला लेना मुआ़फ़ कर देने से अफ़्ज़ल है।

(الطريقة المحمدية مع الحديقة الندية ٣/٨٦ بالاختصار)

नोट :- इस किताब में जहां **कीने** की मज़म्मत की गई है वहां ना जाइज़ व ह़राम **कीना** मुराद है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कीने की हलाक्त ख़ेज़ियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **कीना** वोह मोहलिक (या'नी हलाक कर देने वाली) बात़िनी बीमारी है जिस में मुब्तला होने वाला दुन्या व आख़िरत का ख़सारा उठाता है और इस के मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) अषरात से उस के आस पास रहने वाले अफ़राद भी नहीं बच पाते और यूं येह बीमारी आ़म हो कर मुआ़शरे का सुकून बरबाद कर के रख देती है। ख़ानदानी दुश्मनियां शुरूअ़ हो जाती

हैं, एक दूसरे की टांगें खींची जाती हैं, ज़लील व रुस्वा करने और माली नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश की जाती है, अपने मुसलमान भाई की ख़ैर ख़्वाही करने के बजाए उसे तक्लीफ़ पहुंचाने की कोशिश की जाती है, उस के ख़िलाफ़ साज़िशें की जाती हैं जिस से फ़ितना व फ़साद जनम लेता है। फ़ी ज़माना इस की मिषालें खुली आंखों से देखी जा सकती हैं। **अल्लाह** तआ़ला हम सब को इस मोहलिक बीमारी से बचाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पिछली उम्मतों की बीमारी

याद रहे कि **बुग़्ज़** व **कीना** आज कल की पैदावार नहीं बल्कि बहुत पुरानी बीमारी है, हम से पहली उम्मतें भी इस का शिकार होती रही हैं। दाफ़ेए रंजो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा कमाल है : "अ़न क़रीब मेरी उम्मत को पिछली उम्मतों की बीमारी लाहिक़ होगी।" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "पिछली उम्मतों की बीमारी क्या है?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तकब्बुर करना, इतराना, एक दूसरे की ग़ीबत करना और दुन्या में एक दूसरे पर सबक़त की कोशिश करना नीज़ आपस में **बुग़्ज़** रखना, बुख़्ल करना, यहां तक कि वोह ज़ुल्म में तब्दील हो जाए और फिर फ़ितना व फ़साद बन जाए।" (المعجم الاوسط،باب المیم،من اسمہ مقدام،٦/٣٤٨،الحدیث:٩٠١٦)

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
बुरी आ़दतें भी छुड़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 165)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कीने के नुक़्सानात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिल ही दिल में पलने वाला **कीना** दुन्या व आख़िरत में कैसे कैसे नुक़्सानात का सबब बनता है ! चन्द झलकियां मुलाहज़ा कीजिये, चुनान्चे

﴾1﴿ चुग़ुलख़ोरी और कीना परवरी दोज़ख़ में ले जाएंगे

सरकारे आली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّ النَّمِيْمَةَ وَالْحِقْدَ فِى النَّارِ لَايَجْتَمِعَانِ فِىْ قَلْبِ مُسْلِمٍ बेशक चुग़ुलख़ोरी और **कीना** परवरी जहन्नम में हैं, येह दोनों किसी मुसलमान के दिल में जम्अ़ नहीं हो सकते ।

(المعجم الاوسط،باب العين ، من اسمه عبدالرحمٰن،٣/٣٠١،الحديث ٤٦٥٣)

अल अमान वल ह़फ़ीज़ ! जहन्नम के अ़ज़ाबात इस क़दर ख़ौफ़नाक और दहशतनाक हैं कि हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते, कई अह़ादीष व रिवायात में येह मज़ामीन मौजूद हैं कि दोज़ख़ियों को ज़िल्लत व रुस्वाई के आ़लम में दाख़िले जहन्नम किया जाएगा, वहां दुन्या की आग से सत्तर गुना तेज़ आग होगी जो खालों को जला कर कोइला बना देगी, हड्डियों का सुर्मा बना देगी, उस पर शदीद धुवां जिस से दम घुटेगा, अन्धेरा इतना कि हाथ को हाथ सुजाई न दे, भूक प्यास से निढाल बेड़ियों में जकड़े जहन्नमी को जब पीने के लिये उबलती हुई बदबूदार पीप दी जाएगी तो मुंह के क़रीब करते ही उस की तपिश से मुंह की खाल झड़ जाएगी, खाने को कांटेदार थोहड़ मिलेगा, लोहे के बड़े बड़े हथोड़ों से उसे पीटा जाएगा । इसी क़िस्म के बे शुमार रंजो अलम और तक्लीफ़ों से भर पूर जगह होगी जहां दीगर गुनाहगारों के साथ साथ चुग़ुलख़ोर और **कीना** परवर भी जाएंगे ।

हम क़हरे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार से उस की पनाह के तलबगार हैं।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿2﴾ बख़्शिश नहीं होती

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, महबूबे रब्बे क़दीर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : हर पीर और जुमा'रात के दिन लोगों के आ'माल पेश किये जाते हैं, फिर **बुग़्ज़** व **कीना** रखने वाले दो भाइयों के इलावा हर मोमिन को बख़्श दिया जाता है और कहा जाता है : اُتْرُکُوْا اَوِ ارْکُوْا ھٰذَیْنِ حَتّٰی یَفِیْئَا इन दोनों को छोड़ दो यहां तक कि येह उस **बुग़्ज़** से वापस पलट आएं।

(صحیح مسلم،کتاب البر والصلۃ ، باب النھی عن الشحناء ،ص۱۳۸۸ ،الحدیث۲۵۶۵)

मुसलमानों का **कीना** अपने सीने में पालने वालों के लिये रोने का मक़ाम है कि ख़ुदाए रह़मान की त़रफ़ से हर पीर और जुमा'रात को बख़्शिश के परवाने तक़्सीम होते हैं लेकिन **कीना** परवर अपनी क़ल्बी बीमारी की वजह से बख़्शे जाने वाले ख़ुश नसीबों में शामिल होने से महरूम रह जाता है !

तुझे वासित़ा सारे नबियों का मौला
मेरी बख़्श दे हर ख़त़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.79)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿ रह़मत व मग़्फ़िरत से मह़रूमी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (माहे) शा'बान की पन्दरहवीं रात अपने बन्दों पर (अपनी क़ुदरत के शायाने शान) तजल्ली फ़रमाता है, मग़्फ़िरत चाहने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमाता है और रह़्म त़लब करने वालों पर रह़्म फ़रमाता है जब कि **कीना** रखने वालों को उन की ह़ालत पर छोड़ देता है।

(شعب الایمان، باب فی الصیام، ماجاء فی لیلة النصف من شعبان،٣/٣٨٢،الحدیث:٣٨٣٥)

नाज़ुक फ़ैसलों की रात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعالٰی عَنْهَا से मरवी फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में येह भी है कि शा'बान की पन्दरहवीं रात में मरने वालों के नाम और लोगों का रिज़्क़ और (इस साल) ह़ज करने वालों के नाम लिखे जाते हैं।

(تفسیرالدُرّالمَنثور،٧/٤٠٢، سورة الدخان، تحت الآیة:٥)

ज़रा ग़ौर फ़रमाइये **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** की रात कितनी नाज़ुक है ! न जाने किस की क़िस्मत में क्या लिख दिया जाए ! ऐसी अहम रात में भी **कीना** परवर बख़्शिश व मग़्फ़िरत की ख़ैरात से मह़रूम रहता है।

बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा
गुनाहों से हर दम बचा या इलाही (वसाइले बख़्शिश,स.78)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ जन्नत की ख़ुश्बू भी न पाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَھَّاب ने ख़लीफ़ा हारून रशीद को एक मरतबा नसीह़त करते हुए फ़रमाया : "ऐ ह़सीनो जमील चेहरे वाले ! याद रख ! कल बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ से मख़्लूक़ के बारे में सुवाल करेगा । अगर तू चाहता है कि तेरा येह ख़ूब सूरत चेहरा जहन्नम की आग से बच जाए तो कभी भी सुब्ह़ या शाम इस ह़ाल में न करना कि तेरे दिल में किसी मुसलमान के मुतअ़ल्लिक़ **कीना** या अ़दावत हो । बेशक **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "مَنْ اَصْبَحَ لَھُمْ غَاشًّا لَمْ یَرِحْ رَائِحَۃَ الْجَنَّۃِ" जिस ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि वोह **कीना** परवर है तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू न सूंघ सकेगा ।" येह सुन कर ख़लीफ़ा हारून रशीद रोने लगे ।

(حلیۃ الاولیاء، ۸/۱۰۸، الحدیث۱۱۵۳۶)

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब्ब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ ईमान बरबाद होने का ख़त़रा

ईमान एक अनमोल दौलत है और एक मुसलमान के लिये ईमान की सलामती से अहम कोई शै नहीं हो सकती लेकिन अगर वोह **बुग़्ज़** व ह़सद में मुब्तला हो जाए तो ईमान छिन जाने का अन्देशा है, चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

دَبَّ اِلَيْكُمْ دَاءُ الْاُمَمِ قَبْلَكُمُ الْحَسَدُ وَالْبَغْضَاءُ هِيَ الْحَالِقَةُ لَا اَقُوْلُ تَحْلِقُ الشَّعْرَ وَلٰكِنْ تَحْلِقُ الدِّيْنَ

तुम में पिछली उम्मतों की बीमारी ह़सद और **बुग़्ज़** सरायत कर गई, येह मूंड देने वाली है, मैं नहीं कहता कि येह बाल मूंडती है बल्कि येह दीन को मूंड देती है।

(سنن الترمذی،کتاب صفة القیٰمة،٤/٢٢٨،الحدیث:٢٥١٨)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : इस त़रह़ कि दीन व ईमान को जड़ से ख़त्म कर देती है कभी इन्सान **बुग़्ज़** व ह़सद में इस्लाम ही छोड़ देता है शैत़ान भी इन्हीं दो बीमारियों का मारा हुवा है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/615)

मुसलमां है अ़त्तार तेरी अ़त़ा से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.78)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿6﴾ दुआ क़बूल नहीं होती

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबूल्लैष समरक़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : तीन अश्ख़ास ऐसे हैं जिन की दुआ क़बूल नहीं की जाती : **(पहला)** ह़राम खाने वाला **(दूसरा)** कषरत से ग़ीबत करने वाला और **(तीसरा)** वोह शख़्स कि जिस के दिल में अपने मुसलमान भाइयों का **कीना** या ह़सद मौजूद हो। (درة الناصحین ص٧٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुआ़ अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से ह़ाजत त़लब करने का बेहतरीन वसीला है, इसी के ज़रीए़ बन्दे अपने मन की मुरादें या ख़ज़ानए आख़िरत पाते हैं मगर **कीना** परवर अपने **कीने** के सबब दुआ़ओं की क़बूलिय्यत से मह़रूम हो जाता है।

मैं मंगता तू देने वाला

*या **अल्लाह** मेरी झोली भर दे*

(वसाइले बख़्शिश, स. 108)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾7﴿ दीनदारी न होना

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने इरशाद फ़रमाया : **कीना** परवर कामिल दीनदार नहीं होता, लोगों को ऐ़ब लगाने वाला ख़ालिस इ़बादत गुज़ार नहीं होता, चुग़ल ख़ोर को अम्न नसीब नहीं होता और ह़ासिद की मदद नहीं की जाती।

(منہاج العا بدین، ص۷۵)

मा'लूम हुवा कि अगर कोई शख़्स कीने, ऐ़बजोई, चुग़ल ख़ोरी और ह़सद में मुब्तला हो तो वोह मुत्तक़ी परहेज़ गार कहलाने का ह़क़दार नहीं। बज़ाहिर वोह कैसा ही नेक सूरत व नेक सीरत हो, **अल्लाह** तआ़ला हमें ज़ाहिर व बात़िन में नेक बनने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8) दीगर गुनाहों का दरवाज़ा खुल जाता है

ग़ुस्से से **कीना** पैदा होता है और **कीने** से आठ हलाकत ख़ेज़ चीज़ें जनम लेती हैं। इन में से **एक** येह है कि **कीना** परवर ह़सद करेगा या'नी किसी के ग़म से शाद होगा और उस की ख़ुशी से ग़मगीन। **दूसरा** येह कि शमातत करेगा या'नी किसी को कोई मुसीबत पहुंचेगी तो ख़ुशी का इज़्हार करेगा। **तीसरा** येह कि ग़ीबत, दरोग़ गोई (या'नी झूट) और फ़ोह़्श कलामी से उस के राज़ों को आशकार करेगा। **चौथा** येह कि बात करना छोड़ देगा और सलाम का जवाब नहीं देगा। **पांचवां** येह कि उसे ह़क़ारत की नज़र से देखेगा और उस पर ज़बान दराज़ी करेगा। **छटा** येह कि उस का मज़ाक़ उड़ाएगा। **सातवां** येह कि उस की ह़क़ तलफ़ी करेगा और सिलए रेह़मी नहीं करेगा या'नी अक़रिबा से मुरव्वत नहीं करेगा और रिश्तेदारों के ह़ुक़ूक़ अदा नहीं करेगा और उन के साथ इन्साफ़ नहीं करेगा और त़ालिबे मुआ़फ़ी नहीं होगा। **आठवां** येह कि जब उस पर क़ाबू पाएगा उस को ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाएगा और दूसरों को भी उस की ईज़ा रसानी पर उभारेगा। अगर कोई बहुत दीनदार है और गुनाहों से भागता है तो इतना ज़रूर करेगा कि उस के साथ जो एह़सान करता था उस को रोक देगा और उस के साथ शफ़्क़त से पेश नहीं आएगा और न उस के कामों में दिलसोज़ी करेगा और न उस के साथ **अल्लाह** के ज़िक्र में शरीक होगा और न उस की ता'रीफ़ करेगा और येह तमाम बातें आदमी के नुक़्सान और उस की ख़राबी का बाइ़ष होती हैं। (کیمیائے سعادت ۲/ ۶۰۶ ملخصًا)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि **कीने** की वजह से इन्सान दीगर गुनाहों और बुराइयों की दल-दल में किस त़रह़ फंसता चला जाता है !

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली
मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.78)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿9﴾ कीना परवर बे सुकून रहता है

कीना परवर के शबो रोज़ रंज और ग़म में गुज़रते हैं और वोह पस्त हिम्मत हो जाता है। दूसरों की राह में रोड़े अटकाता है और ख़ुद भी तरक़्क़ी से महरूम रहता है। इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : ''اَقَلُّ النَّاسِ فِى الدُّنْيَا رَاحَةً اَلْحَسُوْدُ وَالْحَقُوْدُ'' दुन्या में **कीना** परवर और ह़ासिदीन सब से कम सुकून पाते हैं। (تنبيه المغترين ص١٨٤)

हर इन्सान सुकून का मुतलाशी होता है मगर नादान **कीना** परवर को ख़बर ही नहीं होती कि सुकून की राह रोकने वाली चीज़ तो उस ने अपने सीने में पाल रखी है, ऐसे में दिल को चैन क्यूंकर नसीब होगा !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿10﴾ मुआ़शरे का सुकून बरबाद हो जाता है

जैसा कि सफ़ह़ा 6 पर गुज़रा कि मुआ़शरे का सुकून बरबाद करने में **कीने** का भी बड़ा किरदार है, येह भाई को भाई से लड़वा देता है, ख़ानदान का शीराज़ह बिखेर देता है, एक बरादरी को दूसरी बरादरी का मुख़ालिफ़ बना देता है और येह मिज़ाजे शरीअ़त के

ख़िलाफ़ है क्यूंकि मुसलमानों को तो भाई भाई बन कर रहने की ताकीद की गई है चुनान्चे,

तुम लोग भाई भाई बन कर रहो

मदीने के सुल्तान, रह़मते आ़लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

لَاتَحَاسَدُوْا وَلَا تَبَاغَضُوْا وَلَا تُدَابِرُوْا وَكُوْنُوْا عِبَادَ اللّٰهِ اِخْوَانًا

या'नी आपस में ह़सद न करो, आपस में **बुग़्ज़** व अ़दावत न रखो, पीठ पीछे एक दूसरे की बुराई बयान न करो और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! भाई भाई हो जाओ।

(صحیح البخاری،کتاب الادب،٤/١١٧،الحدیث:٦٠٦٦)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी बदगुमानी, ह़सद, **बुग़्ज़** वग़ैरा वोह चीज़ें हैं जिन से मह़ब्बत टूटती है और इस्लामी भाईचारा मह़ब्बत चाहता है, लिहाज़ा येह उ़यूब छोड़ो ताकि भाई भाई बन जाओ। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/608)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसलमान तो एक दूसरे के मुह़ाफ़िज़ होते हैं

नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّ الْمُؤْمِنَ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعْضُهٗ بَعْضًا या'नी : बेशक मोमिन के लिये मोमिन मिष्ले इ़मारत के है जिस का एक ह़िस्सा दूसरे ह़िस्से को मज़बूत करता है।

(صحیح البخاری،کتاب الصلوۃ،باب تشبیک الاصابع فی المسجد وغیرہ،١/١٨١،الحدیث ٤٨١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गोशा नशीनी की वजह

जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق तारिकुद्दुन्या (या'नी गोशा नशीन) हो गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर कहा : तारिकुद्दुन्या होने से मख़्लूक़ आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के फ़ुयूज़ो बरकात से महरूम हो गई है ! आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस के जवाब में मुनदरजए ज़ैल दो शे'र पढ़े

ذَهَبَ الْوَفَاءُ ذِهَابَ اَمْسِ الذَّاهِبِ وَالنَّاسُ بَيْنَ مُخَايِلٍ وَّ مَآرِبِ

يُفْشُوْنَ بَيْنَهُمُ الْمَوَدَّةَ وَالْوَفَا وَقُلُوْبُهُمْ مَحْشُوَّةٌ بِعَقَارِبِ

या'नी वफ़ा किसी जाने वाले कल की त़रह़ चली गई और लोग अपने ख़यालात व ह़ाजात में ग़रक़ हो कर रह गए। लोग यूं तो एक दूसरे के साथ इज़्हारे महब्बत व वफ़ा करते हैं लेकिन उन के दिल एक दूसरे के **बुग़्ज़** व **कीने** के बिच्छूओं से लबरेज़ हैं !

(تذکرۃ الاولیاء ص۲۲)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस ह़िकायत को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق लोगों की मुनाफ़क़त वाली रविश से तंग आ कर ख़ल्वत (तन्हाई) में तशरीफ़ फ़रमा हो गए। उस पाकीज़ा दौर में भी येह सूरते ह़ाल होने लगी थी तो अब तो जो ह़ाल बे ह़ाल है उस का किस से शिकवा कीजिये। आह ! आज कल तो

अकषर लोगों का ह़ाल ही अ़जीब हो गया है जब बाहम मिलते हैं तो एक दूसरे के साथ निहायत ता'ज़ीम के साथ पेश आते और ख़ूब ह़ाल अह़वाल पूछते हैं, हर त़रह़ की ख़ात़िर दारी और ख़ूब मेहमान दारी करते हैं कभी ठंडी बोतल पिला कर निहाल करते हैं तो कभी चाए पिला कर, पान गुटके से मुंह लाल करते हैं। ब ज़ाहिर हंस हंस कर ख़ुश कलामी व क़ीलो क़ाल करते हैं मगर अपने दिल में उस के बारे में **बुग़्ज़** व मलाल रखते हैं। (ग़ीबत की तबाह कारियां, स.128)

ज़ाहिरो बात़िन हमारा एक हो येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुग़्ज़ व **कीने** और त़रह़ त़रह़ के ज़ाहिरी व बात़िनी गुनाहों से बचने का जज़्बा पाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी त़हरीक, दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल किसी ने'मते उ़ज़मा से कम नहीं, इस से हर दम वाबस्ता रहिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस से मुन्सलिक (مُ۔سَ۔لِک) होने वालों की ज़िन्दगियों में ह़ैरत अंगेज़ तब्दीलियां बल्कि मदनी इन्क़िलाब बर्पा हो जाता है। इस ज़िम्न में एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे

ज़िन्दगी का रुख़ बदल गया

लुधरां (पंजाब, पाकिस्तान) के नवाह़ी अ़लाक़े सूईवाला में मुक़ीम इस्लामी भाई का त़हरीरी बयान कुछ यूं है : मैं नित नए फ़ैशन का दिल दादह और फ़िल्मों ड्रामों का इस क़दर शौक़ीन था

कि हमारे अ़लाक़े में मिनी सीनेमा चलाने वाले भी मुझ से पूछ पूछ कर फ़िल्में मंगवाया करते थे। हर नया गाना पहले हमारी सिलाई की दुकान पर ही सुना जाता। मैं बद निगाही और गंदी फ़िल्में देखने की आ़दते बद में भी मुब्तला था। ग़ालिबन 1993 ई. की बात है कि मैं किसी काम के सिलसिले में बाबुल मदीना कराची गया, इस दौरान मामूज़ाद भाई के साथ कोरंगी (साढ़े तीन) में होने वाले दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में भी शरीक हुवा लेकिन अपना वक़्त घूमने फिरने में गुज़ार कर अपने शहर वापस आ गया लिहाज़ा मेरी आ़दतो अत्वार में कोई ख़ास तब्दीली न आ सकी, इतना ज़रूर हुवा कि मैं दा'वते इस्लामी से महब्बत करने लगा। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम हुवा कि हमारे अ़लाक़े में लुधरां से तीन दिन का मदनी क़ाफ़िला तशरीफ़ लाया। मदनी क़ाफ़िले में शरीक आ़शिक़ाने रसूल की इनफ़िरादी कोशिश की बरकत से मैं ने भी तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत कर ली। जुमा'रात को रवानगी थी मगर मैं किसी मजबूरी की वजह से सफ़र न कर सका लेकिन लुधरां जा कर हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत ज़रूर की। जब मैं इजतिमाअ़ में पहुंचा तो रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ हो रही थी, दुआ़ के लिये बैठते ही मेरी आंखों से आंसूओं की झड़ी लग गई और दिल से गुनाहों की सियाही धुलना शुरूअ़ हो गई। अगली जुमा'रात हम तक़रीब 20 इस्लामी भाई हफ़्तावार इजतिमाअ़ में पहुंचे, यूं हमारे अ़लाक़े से इजतिमाअ़ में आने जाने का सिलसिला शुरूअ़ हो गया। मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़ में होने वाले बैनल अक़्वामी इजतिमाअ़ में भी हमारे अ़लाक़े से बस भर कर गई। मदनी माहोल की बरकत

से मैं ने न सिर्फ़ फ़िल्में देखना छोड़ दीं बल्कि गानों की कैसिटों पर भी बयानात भरवा लिये, जिस पर मेरे बड़े भाई ख़फ़ा भी हुए मगर मैं ने हिक्मते अ़मली से तरकीब बना ली।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे मदनी माहोल में आने की बरकत से वालिद साहिब और बड़े भाई ने भी चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करता रहा और अपने अ़लाक़े में मदनी काम करने की कोशिशें करता रहा, यूं दिये से दिया जलता रहा और अ़लाक़े में कई इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी से वाबस्ता हो गए। फिर मेरी शादी भी मदनी माहोल की तरकीब से हुई, नाच गानों की जगह ना'त ख़्वानी और सुन्नतों भरे बयान का सिलसिला हुवा और बारात भी ना'तों की सदाओं में रवाना हुई। मेरे वाक़िफ़े कार और अ़ज़ीज़ो अक़रिबा हैरत का इज़हार कर रहे थे कि हम ने ऐसी शादी पहली बार देखी है। शादी के कुछ ही साल बा'द मेरे एक और भाई जो बहुत फ़ैशनेबल थे उन्हों ने भी सादगी इख़्तियार कर ली और चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली। जब मेरे वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हुवा तो इतना कषीर ईसाले षवाब किया गया कि सुनने वाले हैरान रह गए कि हम ने अपनी ज़िन्दगी में इतना ईसाले षवाब किसी के लिये नहीं सुना, येह दा'वते इस्लामी की बरकतें हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पहले अ़लाक़ाई मुशावरत में बतौरे ख़ादिम (निगरान) काम किया, फिर डिवीज़न सत्ह पर मदनी इन्आ़मात की ज़िम्मेदारी मिली, फिर सूबाई मुशावरत में मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार बना, अब ता दमे तह़रीर डिवीज़न मुशावरत में ख़ादिम (या'नी निगरान) और काबीना सत्ह पर मदनी अ़त़िय्यात बॉक्स की ज़िम्मेदारी निभाने के लिये कोशां हूं।

अ़ताए ह़बीबे ख़ुदा मदनी माहोल है फ़ैज़ाने ग़ौषो रज़ा मदनी माहोल
ब फ़ैज़ाने अह़मद रज़ा اِنْ شَآءَاللّٰه येह फूले फलेगा सदा मदनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बदतरीन बुग़्ज़ व कीना

आ़म मुसलमानों से बिला वजहे शरई **कीना** रखना बेशक ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है मगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सादाते उ़ज़्ज़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم, उ–लमाए किराम और अ़रबों से **बुग़्ज़ व कीना** रखना इस से कहीं ज़ियादा बुरा है। ऐसा करने वाले की शदीद मज़म्मत की गई है। चुनान्चे

सह़ाबए किराम से बुग़्ज़ रखने की वईदे शदीद

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरे अस्ह़ाब के ह़क़ में ख़ुदा से डरो ! ख़ुदा का ख़ौफ़ करो !! इन्हें मेरे बा'द निशाना न बनाओ, जिस ने इन्हें मह़बूब रखा मेरी मह़ब्बत की वजह से मह़बूब (या'नी प्यारा) रखा और जिस ने इन से **बुग़्ज़** किया वोह मुझ से **बुग़्ज़** रखता है, इस लिये उस ने इन से **बुग़्ज़** रखा, जिस ने इन्हें ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी, जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने बेशक ख़ुदा तआ़ला को ईज़ा दी, जिस ने **अल्लाह** तआ़ला को ईज़ा दी क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे गिरिफ़्तार करे।

(سُنَنِ ترمذی،کتاب المناقب،٥/٤٦٣،الحدیث:٣٨٨٨)

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादाबादी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡھَادِی फ़रमाते हैं : मुसलमान को चाहिये कि सह़ाबए किराम (عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان) का निहायत अदब रखे और दिल में इन की अ़क़ीदत व मह़ब्बत को जगह दे । इन की मह़ब्बत हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत है और जो बद नसीब सह़ाबा (عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان) की शान में बे अदबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने खुदा व रसूल है । मुसलमान ऐसे शख़्स के पास न बैठे । (सवानह़े करबला, स. 31)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इ़तरत रसूलुल्लाह की

(ह़दाइ़क़े बख़्शिश, स. 153)

(या'नी एहले सुन्नत का बेड़ा पार है क्यूंकि सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان इन के लिये सितारों की मानिन्द और अहले बैते अत़हार عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان किश्ती की त़रह़ हैं)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان से बुग़्ज़ व अ़दावत रखने वाले का भयानक अन्जाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان से **बुग़्ज़** व अ़दावत रखना दारैन (या'नी दुन्या व आख़िरत) में नुक़्सान व खुसरान का सबब है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना नूरुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान जामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی अपनी मश्हूर किताब शवाहिदुन्नुबुव्वह में नक़्ल करते हैं : तीन अफ़राद यमन के सफ़र पर निकले इन में

एक कूफ़ी (या'नी कूफ़े का रहने वाला) था जो शैख़ैने करीमैन (ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का गुस्ताख़ था, उसे समझाया गया लेकिन वोह बाज़ न आया। जब येह तीनों यमन के क़रीब पहुंचे तो एक जगह क़ियाम किया और सो गए। जब कूच का वक़्त आया तो इन में से उठ कर दो ने वुज़ू किया और फिर उस गुस्ताख़ कूफ़ी को जगाया। वोह उठ कर कहने लगा : अफ़्सोस ! मैं तुम से इस मंज़िल में पीछे रह गया हूं, तुम ने मुझे ऐन उस वक़्त जगाया जब शहनशाहे अ़जम व अ़रब, महबूबे रब्ब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे सिरहाने तशरीफ़ ला कर इरशाद फ़रमा रहे थे : ऐ फ़ासिक़ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़ासिक़ को ज़लीलो ख़्वार करता है, इसी सफ़र में तेरी शक्ल बदल जाएगी। जब वोह गुस्ताख़ उठ कर वुज़ू के लिये बैठा तो उस के पाऊं की उंगलियां मस्ख़ होना (बिगड़ना) शुरूअ़ हो गईं, फिर उस के दोनों पाऊं बन्दर के पाऊं के मुशाबेह हो गए, फिर घुटनों तक बन्दर की त़रह़ हो गया, यहां तक कि उस का सारा बदन बन्दर की त़रह़ बन गया। उस के रुफ़क़ा ने उस बन्दर नुमा गुस्ताख़ को पकड़ कर ऊंट के पालान के साथ बांध दिया और अपनी मंज़िल की त़रफ़ चल दिये। ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त वोह एक ऐसे जंगल में पहुंचे जहां कुछ बन्दर जम्अ़ थे, जब उस ने उन को देखा तो मुज़्तरिब (या'नी बे ताब) हो कर रस्सी छुड़ाई और उन में जा मिला। फिर सभी बन्दर इन दोनों के क़रीब आए तो येह ख़ाइफ़ (या'नी खोफ़ज़दा) हो गए मगर उन्हों ने इन को कोई अज़िय्यत न दी और वोह बन्दर नुमा गुस्ताख़ इन दोनों के पास बैठ गया और इन्हें देख देख कर आंसू बहाता रहा। एक घन्टे के बा'द जब बन्दर वापस गए तो वोह भी उन के साथ ही चला गया। (شَوَاھِدُ النُّبُوَّۃ ص ۲۰۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा ! शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का गुस्ताख़ बन्दर बन गया। किसी किसी को इस त़रह़ दुन्या में भी सज़ा दे कर लोगों के लिये इ़ब्रत का नुमूना बना दिया जाता है ताकि लोग डरें, गुनाहों और गुस्ताख़ियों से बाज़ आएं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम को सह़ाबए किराम और अहले बैते इ़ज़ाम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मह़ब्बत करने वालों में रखे।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सादात से बुग़्ज़ रखने वाले को ह़ौज़े कौषर पर चाबुक मारे जाएंगे

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : हम से **बुग़्ज़** मत रखना कि रसूले पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَایُبْغِضُنَا وَ لَایَحْسُدُنَا اَحَدٌ اِلَّا ذِیْدَ عَنِ الْحَوْضِ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ بِسِیَاطٍ مِنْ نَارٍ जो शख़्स हम से **बुग़्ज़** या ह़सद करेगा, उसे क़ियामत के दिन ह़ौज़े कौषर से आग के चाबूकों के ज़रीए़ दूर किया जाएगा।

(المعجم الاوسط،۲/۳۳،الحدیث ۲٤۰۵)

अहले बैत का दुश्मन दोज़ख़ी है

एक त़वील ह़दीषे पाक में येह भी है कि अगर कोई शख़्स **बैतुल्लाह शरीफ़** के एक कोने और **मक़ामे इब्राहीम** के दरमियान जाए और नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे और फिर वोह **अहले बैत** की दुश्मनी पर मर जाए तो वोह जहन्नम में जाएगा।

(المستدرک،کتاب معرفۃ الصحابۃ، ٤/۱۲۹-۱۳۰،الحدیث ٤٧٦٦)

हुब्बे सादात ऐ ख़ुदा दे वासिता
अहले बैते पाक का फ़रियाद है

(वसाइले बख़्शिश, स. 503)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़रबों से बुग़्ज़ व कदूरत रखने वाला शफ़ाअ़त से महरूम

अ़रब मुमालिक में काम करने वाले बा'ज़ लोग **अ़रबों** को बुरा भला कहते रहते हैं और बा'ज़ हुज्जाज भी, इस से बचना ज़रूरी है। हज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शाहे बनी आदम, नबिय्ये मोहतशम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ غَشَّ الْعَرَبَ لَمْ يَدْخُلْ فِيْ شَفَاعَتِيْ وَ لَمْ تَنَلْهُ مَوَدَّتِيْ जिस ने अहले अ़रब से **बुग़्ज़** व कदूरत रखी मेरी शफ़ाअ़त में दाख़िल न होगा और न ही उसे मेरी महब्बत नसीब होगी।

(ترمذی،کتاب المناقب،۵/ ۴۸۷،حدیث:۳۹۵۴)

जिस ने अ़रबों से बुग़्ज़ रखा उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा

महबूबे रब्ब, ताजदारे अ़रब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **अ़रब** की महब्बत **ईमान** है और इन का **बुग़्ज़ कुफ़्र** है, जिस ने **अ़रब** से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने उन से **बुग़्ज़** रखा उस ने मुझ से **बुग़्ज़** रखा।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ،۲/ ۶۶،الحدیث ۲۵۳۷)

अ़रब से बुग़्ज़ कब कुफ़्र है

हज़रते अ़ल्लामा मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के फ़रमाने गिरामी का ख़ुलासा है : सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अ़रबी हैं और

कुरआन भी अहले अ़रब की ज़बान में है, इन निस्बतों की वजह से अगर कोई **अ़रबों** से **बुग़्ज़** रखे तो इस से सुल्ताने अ़रब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का **बुग़्ज़** लाज़िम आएगा जो कि **कुफ़्र** है।

(فیضُ القدیر لِلمناوی،۳/۲۳۱، تحت الحدیث ۲۲۵)

तीन वुजूह की बिना पर अ़रब से महब्बत रखो

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने महब्बत निशान है: तीन वुजूह की बिना पर **अ़रब** से महब्बत रखो, इस लिये की ﴿1﴾ मैं अ़रबी हूं ﴿2﴾ कुरआने मजीद अ़रबी है ﴿3﴾ अहले जन्नत का कलाम अ़रबी है।

(شُعَبُ الْاِیْمَان،باب فی تعظیم النبی صلی اللہ علیہ وسلم ۲/۲۳۰،الحدیث ۱۶۱۰)

हुस्ने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नां
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अ़रब

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 58)

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 286 ता 299 मुल्तक़त़न)

क्या कुफ़्फ़ारे अ़रब से भी महब्बत रखनी होगी?

महब्बत ईमान के साथ मशरूत़ है, लिहाज़ा कुफ़्फ़ार व मुर्तद्दीने अ़रब से महब्बत तो दूर की बात है उन से अ़दावत रखनी वाजिब है। जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْقَوِی फ़रमाते हैं: जो अहले अ़रब काफ़िर या मुनाफ़िक़ हैं उन से **बुग़्ज़** रखना बुरा नहीं बल्कि वाजिब है। (فیض القدیر،۱/۲۳۱، تحت الحدیث ۲۲۵)

अहले अ़रब अ़रबी आक़ा के हम क़ौम हैं

अ़रबी लोग क़ौमिय्यत के ए'तिबार से चूंकि अ़रबी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत रखते हैं लिहाज़ा महब्बत का तक़ाज़ा भी येही है कि जो अहले अ़रब मुसलमान हैं उन को बुरा भला कहने से ज़बान को रोका जाए, हां उन में जो कुफ़्फ़ार, मुर्तद्दीन और मुनाफ़िक़ीन हैं यक़ीनन वोह बुरे हैं और उन को बुरा कहा जाएगा। देखिये ! अबू लहब भी अ़रबी था मगर उस की मज़म्मत में कुरआने पाक की एक पूरी सूरत सूरए लहब मौजूद है। बहर हाल अगर **अ़रबियों** में से किसी की त़रफ़ से बिल फ़र्ज़ आप को कोई ज़ाती तक्लीफ़ पहुंच भी गई हो तब भी सब्र से काम लीजिये। यक़ीनन इस एक की ईज़ादेही की वजह से सब अ़रब हरगिज़ बुरे नहीं बन गए। अहले अ़रब से महब्बत के लिये हम ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा के लिये येही बात काफ़ी है कि हमारे प्यारे प्यारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **अ़रबी** हैं।

हाए किस वक़्त लगी फांस अलम की दिल में
कि बहुत दूर रहे ख़ारे मुग़ीलाने अ़रब

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 60)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इल्म और आ़लिम से बुग़्ज़ रखने वाला न बन कि हलाक हो जाएगा

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : اُغْدُ عَالِمًا اَوْ مُتَعَلِّمًا اَوْ مُسْتَمِعًا اَوْ مُحِبًّا وَلَا تَكُنِ الْخَامِسَةَ فَتَهْلِكَ आ़लिम बन या मुतअ़ल्लिम, या इल्मी गुफ़्तगू सुनने वाला या

इल्म से महब्बत करने वाला बन और पांचवां (या'नी इल्म और आ़लिम से **बुग़्ज़** रखने वाला)[1] न बन कि हलाक हो जाएगा।

(الجامع الصغیر،ص۷۸،حدیث:۱۲۱۳)

आ़लिमे दीन से ख़्वाह मख़्वाह बुग़्ज़ रखने वाला मरीज़ुल क़ल्ब और ख़बीषुल बातिन है

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 129 पर फ़रमाते हैं: ﴿1﴾ "अगर आ़लिमे (दीन) को इस लिये बुरा कहता है कि वोह "आ़लिम" है जब तो सरीह़ काफ़िर है और ﴿2﴾ अगर ब वजहे इल्म उस की ता'ज़ीम फ़र्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यवी ख़ुसुमत (या'नी दुश्मनी) के बाइ़ष बुरा कहता है, गाली देता (है और) तह़क़ीर करता है तो सख़्त फ़ासिक़ फ़ाजिर है और ﴿3﴾ अगर बे सबब (या'नी बिला वजह) रंज (**बुग़्ज़**) रखता है तो मरीज़ुल क़ल्ब ख़बीषुल बातिन (या'नी दिल का मरीज़ और नापाक बातिन वाला है) और उस (या'नी ख़्वाह मख़्वाह **बुग़्ज़** रखने वाले) के कुफ़्र का अन्देशा है। "ख़ुलासा" में है: مَنْ اَبْغَضَ عَالِماً مِّنْ غَيْرِ سَبَبٍ ظَاهِرٍ خِيْفَ عَلَيْهِ الْكُفْر (या'नी "जो बिला किसी ज़ाहिरी वजह के आ़लिमे दीन से **बुग़्ज़** रखे उस पर कुफ़्र का ख़ौफ़ है।") (ख़ुलासतुल फ़तावा, 4/388)

मुझ को ऐ अ़त्तार सुन्नी आ़लिमों से प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰه दो जहां में मेरा बेड़ा पार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 646)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

[1] فیض القدیر،۲/۲۲،تحت الحدیث:۱۲۱۳

यहूदी मुआ़लिज का इमाम माज़री के साथ कीना व ह़सद

इमाम माज़री رَحِمَہُ اللّٰہُ تَعَالٰی अ़लील (या'नी बीमार) हुए (तो) एक यहूदी मुआ़लिज (या'नी त़बीब, आप का इ़लाज कर रहा) था, अच्छे हो जाते फिर मरज़ औ़द करता (या'नी दोबारा हो जाता), कई बार यूहीं हुवा, आख़िर उसे तन्हाई में बुला कर दरयाफ़्त फ़रमाया। उस ने कहा : अगर आप सच पूछते हैं तो हमारे नज़्दीक इस से ज़ियादा कोई कारे षवाब नहीं कि आप जैसे इमाम को मुसलमानों के हाथ से खो दूं। इमाम رَحِمَہُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने उसे दफ़्अ़ (या'नी दूर) फ़रमाया। मौला तआ़ला ने शिफ़ा बख़्शी, फिर इमाम رَحِمَہُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने त़िब्ब की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई और इस में तसानीफ़ कीं और त़लबा को ह़ाज़िक़ अत़िब्बा (या'नी माहिर त़बीब) कर दिया और मुसलमानों को मुमानअ़त फ़रमा दी कि काफ़िर त़बीब से कभी इ़लाज न कराएं।[1] (फ़तावा रज़विय्या, 21/243)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औलियाए किराम से बुग़्ज़ रखने वाले की तौबा

बग़्दाद शरीफ़ का एक ताजिर औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام से बहुत **बुग़्ज़** रखता था। एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی को नमाज़े जुमुआ़ पढ़ कर फ़ौरन मस्जिद से बाहर निकलते देख कर दिल में कहने लगा कि देखो तो सही ! येह वली बना फिरता है ! ह़ालांकि मस्जिद में इस का दिल नहीं लगता जभी तो नमाज़ पढ़ते ही फ़ौरन बाहर निकल गया है। वोह ताजिर येही कुछ सोचता और कहता हुवा उन के पीछे पीछे चलने लगा। ह़ज़रते

(1) : कुफ़्फ़ार से इ़लाज करवाने के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात फ़तावा रज़विय्या जि. 21 सफ़ह़ा 238 ता 243 पर मुलाह़ज़ा कीजिये।

सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی ने एक नानबाई की दुकान से रोटी ख़रीदी और शहर से बाहर की जानिब चल पड़े। ताजिर को येह देख कर और भी ग़ुस्सा आया और बोला : येह शख़्स मह़ज़ रोटी के लिये मस्जिद से जल्दी निकल आया है और अब शहर के बाहर किसी सब्ज़ाज़ार में बैठ कर खाएगा। ताजिर ने तआ़क़ुब जारी रखते हुए येह ज़ेह्न बनाया कि जूं ही बैठ कर येह रोटी खाने लगेगा, मैं पूछूंगा कि क्या वली ऐसे ही होते हैं जो रोटी की ख़ातिर मस्जिद से फ़ौरन निकल आएं ! चुनान्चे ताजिर पीछे पीछे हो लिया ह़त्ता कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی किसी गाऊं में दाख़िल हो कर एक मस्जिद में तशरीफ़ ले गए। वहां एक बीमार आदमी लैटा हुवा था, ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی ने उस बीमार के सिरहाने बैठ कर उसे अपने मुबारक हाथ से रोटी खिलाई। ताजिर येह मुआ़मला देख कर ह़ैरान हुवा। फिर गाऊं देखने के लिये बाहर निकला। थोड़ी देर के बा'द जब दोबारा मस्जिद में आया तो देखा कि मरीज़ वहीं लैटा है मगर ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی वहां मौजूद नहीं। उस ने मरीज़ से पूछा कि कहां गए ? उस ने बताया कि वोह तो बग़्दाद शरीफ़ तशरीफ़ ले गए। ताजिर ने पूछा : बग़्दाद यहां से कितनी दूर है ? वोह बोला : चालीस मील। ताजिर सोचने लगा कि मैं तो बड़ी मुश्किल में फंस गया कि इन के पीछे इतनी दूर निकल आया और तअ़ज्जुब है कि आते हुए कुछ पता ही नहीं चला मगर अब किस त़रह़ वापसी होगी ? फिर उस ने पूछा कि अब दोबारा वोह यहां कब आएंगे ? बोला : अगले जुमुआ़ को। नाचार ताजिर वहीं रुका रहा। जब जुमुआ़ आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی अपने

वक़्त पर तशरीफ़ लाए और मरीज़ को रोटी खिलाई । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने उस ताजिर से फ़रमाया : आप क्यूं मेरे पीछे आए थे ? ताजिर ने आ़जिज़ी के साथ अ़र्ज़ की : हुज़ूर मेरी ग़लती थी ! फ़रमाया : उठिये और मेरे पीछे पीछे चले आइये । चुनान्चे वोह ह़ज़रत के पीछे पीछे चलने लगा और थोड़ी ही देर में दोनों बग़दाद शरीफ़ पहुंच गए । ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی **की ज़िन्दा करामत देख कर बग़दाद के ताजिर ने औलियाए किराम के बुग़्ज़ से तौबा की और आयन्दा इन पाक लोगों का दिल से मो'तक़िद हो गया ।** (روض الریاحین ص ۲۱۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुझे औलिया की मह़ब्बत अ़ता कर
तू दीवाना कर ग़ौष का या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रिज़ाए इलाही पाने, दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) जगाने, ईमान की ह़िफ़ाज़त की कुढ़न बढ़ाने, मौत का तसव्वुर जमाने, ख़ुद को अ़ज़ाबे क़ब्र व जहन्नम से डराने, ज़ाहिरी व बात़िनी गुनाहों की आ़दत मिटाने, अपने आप को सुन्नतों का पाबन्द बनाने, दिल में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने और जन्नतुल फ़िरदौस में मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

का पड़ोस पाने का शौक़ बढ़ाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के हमराह मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये और **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए रोज़ाना **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते रहिये। आइये, आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक मदनी बहार सुनाऊं :

मामूं की इनफ़िरादी कोशिश

चकवाल (पंजाब) के एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 20 साल) का बयान अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में पेश करता हूं : जब मैं मेट्रिक में था, उस वक़्त दोस्तों के साथ सैरो तफ़रीह़ करना, स्नोकर खेलना, लड़ना झगड़ना और बद मुआ़शी व दादागीरी करना, अम्रदों में दिलचस्पी रखना मेरे बद तरीन मा'मूलात में शामिल थे। एक दोस्त की दा'वत पर अव्वलन सिगरेट नोशी शुरूअ़ की फिर शराब नोशी जैसे मोहलिक नशे में मुब्तला हो गया। बुरी सोह़बतों का ऐसा चस्का पड़ा कि मैं तीन तीन दिन और बा'ज़ अवक़ात तो सारा हफ़्ता घर नहीं जाता था। मेरी बिगड़ी हुई आ़दतों की वजह से घर वाले सख़्त परेशान थे। मेरे वालिद साह़िब मुझे समझा समझा कर थक गए मगर मेरे कान पर जूं तक न रैंगी, बिल आख़िर उन्हों ने मुझ से बात चीत भी बन्द कर दी। मैं सुधरने के बजाए बिगड़ता चला गया। कमो बेश चार साल इसी कैफ़िय्यत में गुज़र गए। एक दिन मेरी मुलाक़ात अपने मामूं से हुई जो दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे। उन्हों ने मुझे बड़ी

शफ़्क़त दी और मेरा ज़ेह्न बनाया कि मैं दा'वते इस्लामी में होने वाला **मदनी तर्बिय्यती कोर्स** कर लूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं तय्यार हो गया और ज़िन्दगी में पहली मरतबा फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक हुवा, मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी का बयान सुन कर मैं पिघल सा गया और सोचने पर मजबूर हो गया कि काश ! मैं बहुत पहले **फ़ैज़ाने मदीना** में आ गया होता और अपने गुनाहों से तौबा कर ली होती ! बहर हाल यहां पर मदनी तर्बिय्यती कोर्स में शामिल हो कर मुझे नेक बनने का जज़्बा मिला, तौबा की तौफ़ीक़ मिली, न सिर्फ़ फ़र्ज़ **नमाज़ों** की पाबन्दी नसीब हुई बल्कि तहज्जुद, इशराक़, चाश्त और मग़रिब के बा'द अव्वाबीन के **नवाफ़िल** भी पढ़ने की भी सआ़दत मिली। इल्मे दीन सीखने को मिला, वालिदैन के हुक़ूक़ का पता चला, रब्ब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने का ज़ेह्न मिला। मदनी तर्बिय्यती कोर्स के बा'द मदनी क़ाफ़िला कोर्स करने और आ़शिक़ाने रसूल के साथ 12 माह के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की भी निय्यत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मरते दम तक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तेरा शुक्र मौला दिया मदनी माह़ोल न छुटे कभी भी ख़ुदा मदनी माह़ोल
सलामत रहे या ख़ुदा मदनी माह़ोल बचे बद नज़र से सदा मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 602)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तुम्हारे दिल में किसी के लिये कीना व बुग़्ज़ न हो

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ताजदारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : یَا بُنَیَّ! اِنْ قَدِرْتَ اَنْ تُصْبِحَ وَ تُمْسِیَ لَیْسَ فِیْ قَلْبِكَ غِشٌّ لِاَحَدٍ فَافْعَلْ ऐ मेरे बेटे ! अगर तुम से हो सके कि तुम्हारी सुब्हो शाम ऐसी हालत में हो कि तुम्हारे दिल में किसी के लिये **कीना** व **बुग़्ज़** न हो तो ऐसा ही किया करो। (ترمذی،کتاب العلم،٤/٣٠٩،الحدیث:٢٦٨٧)

या'नी मुसलमान भाई की तरफ़ से दुन्यवी उमूर में साफ़ दिल हो, सीना **कीने** से पाक हो तब इस में अन्वारे मदीना आएंगे। धुंदला आईना और मैला दिल क़ाबिले इज़्ज़त नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह, 1/172)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अफ़्ज़ल कौन ?

हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई कि लोगों में से कौन अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : हर सलामत दिल वाला, सच्ची ज़बान वाला। लोगों ने अ़र्ज़ की : सच्ची ज़बान वाले को तो हम जानते हैं, येह सलामत दिल वाला क्या है ? फ़रमाया : هُوَ التَّقِیُّ النَّقِیُّ لَا اِثْمَ فِیْہِ وَ لَا بَغْیَ وَلَا غِلَّ وَلَا حَسَدَ या'नी वोह ऐसा सुथरा है जिस पर न गुनाह हो, न बग़ावत, न **कीना** और न ह़सद।

(سنن ابن ماجہ،کتاب الزھد، باب الورع،٤/٤٧٥،الحدیث:٤٢١٦)

जन्नती आदमी

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि हम ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर थे कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "یَطۡلُعُ عَلَیۡکُمُ الۡاٰنَ مِنۡ ھٰذَا الۡفَجِّ رَجُلٌ مِّنۡ اَھۡلِ الۡجَنَّۃِ" अभी तुम्हारे पास इस रास्ते से एक **जन्नती आदमी** आएगा। उसी वक़्त एक अन्सारी साह़िब वहां आए जिन की दाढ़ी वुज़ू के पानी से तर थी, उन्हों ने बाएं हाथ में अपनी जूतियां उठा रखी थीं। दूसरे दिन फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहले दिन की त़रह़ इरशाद फ़रमाया और वोही शख़्स आए, तीसरे दिन भी ऐसा ही हुवा। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं उस अन्सारी के पास पहुंचा और पूछा : क्या आप मेरी मेहमान नवाज़ी कर सकते हैं ? उन्हों ने हामी भर ली और मुझे अपने साथ ले गए। मैं तीन रातें उन के पास रहा, इस दौरान मैं ने उन्हें रात को क़ियाम करते (या'नी नवाफ़िल अदा करते हुए) नहीं देखा, हां ! येह ज़रूर देखा कि जब वोह बिस्तर पर करवटें बदलते तो ज़िक्रुल्लाह करते यहां तक कि नमाज़े फ़ज्र का वक़्त हो जाता और वोह अच्छी बात करते या ख़ामोश रहते। जब तीन रातें इसी त़रह़ गुज़र गईं तो मैं ने उन के अ़मल को कम जाना चुनान्चे मैं ने उन से कहा कि मैं ने सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना : "یَطۡلُعُ عَلَیۡکُمُ الۡاٰنَ مِنۡ ھٰذَا الۡفَجِّ رَجُلٌ مِّنۡ اَھۡلِ الۡجَنَّۃِ" अभी तुम्हारे पास एक

जन्नती आदमी आएगा'' फिर तीनों मरतबा आप ही आए तो मैं ने सोचा कि आप के पास रह कर आप का अ़मल देखूं, लेकिन मुझे तो आप का कोई ज़ियादा अ़मल दिखाई नहीं दिया। जब मैं वापस होने लगा तो उन्हों ने मुझे बुलाया और कहा : मेरा अ़मल तो वोही है जो आप देख चुके हैं लेकिन मैं अपने दिल में किसी मुसलमान के लिये **कीना** नहीं रखता और न ही किसी मुसलमान को मिलने वाली ने'मते इलाही पर **ह़सद** करता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : येही वोह वस्फ़ है जिस ने आप को इस मक़ाम पर पहुंचा दिया।

(شعب الایمان،باب فی الحث علی ترک الغل والحسد،٥/٢٦٤،الحدیث:٦٦٠٥دون بعض الجمل)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! इस बिशारत अफ़्रोज़ ह़िकायत से दुन्या से बे रग़बती और अपने दिल को बात़िनी गुनाहों बिल ख़ुसूस **बुग़्ज़** व **कीना** से पाक रखने की फ़ज़ीलत मा'लूम हुई।

ख़त़ाओं को मेरी मिटा या इलाही
मुझे नेक ख़स्लत बना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिस्म के साथ साथ दिल भी सुथरा रखना ज़रूरी है

ज़ाहिरी जिस्म और लिबास की सफ़ाई सुथराई अपनी जगह लेकिन दिल की पाकीज़गी की अपनी अहम्मिय्यत है। सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का

फ़रमाने त़हारत निशान है : اِنَّ اللّٰهَ لَا يَنْظُرُ اِلٰى صُوَرِكُمْ وَ اَمْوَالِكُمْ وَ لٰكِنْ يَنْظُرُ اِلٰى قُلُوْبِكُمْ وَ اَعْمَالِكُمْ या'नी **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी सूरतों और अम्वाल की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता बल्कि वोह तुम्हारे दिलों और आ'माल की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है।

(صحيح مسلم،باب تحريم ظلم المسلم وخذله واحتقاره.....الخ، ص ١٣٨٦ حديث٢٥٦٤)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى "मिन्हाजुल आ़बिदीन" में येह ह़दीष नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं : दिल रब्बुल आ़लमीन की नज़र का मक़ाम है तो उस शख़्स पर तअ़ज्जुब है जो ज़ाहिरी चेहरे का ख़याल रखे, उसे धोए, मैल कुचेल से सुथरा रखे ताकि मख़्लूक़ उस के चेहरे के किसी ऐ़ब पर मुत्त़लअ़ न हो मगर दिल का ख़याल न रखे जो रब्बुल आ़लमीन की नज़र का मक़ाम है ! चाहिये तो येह था कि दिल को पाकीज़ा रखता उस को आरास्ता करता ताकि रब्बुल आ़लमीन को उस में कोई ऐ़ब न दिखाई दे लेकिन अफ़्सोस का मक़ाम है कि दिल तो गन्दगी पलीदी और ग़लाज़त से लबरेज़ है मगर जिस पर मख़्लूक़ की नज़र पड़ती है उस के लिये कोशिश होती है कि उस में कोई ऐ़ब व क़बाह़त न पाई जाए !

(منهاج العابدين ص٦٨)

मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर
कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.78)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मैं तुम्हारे पास साफ़ सीना आया करूं

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने उल्फ़त निशान है : لَا يُبْلِغْنِىْ اَحَدٌ مِّنْ اَصْحَابِىْ عَنْ اَحَدٍ شَيْئًا، فَاِنِّىْ اُحِبُّ اَنْ اَخْرُجَ اِلَيْكُمْ وَاَنَا سَلِيْمُ الصَّدْرِ या'नी मुझे कोई सह़ाबी किसी की त़रफ़ से कोई बात न पहुंचाए, मैं चाहता हूं कि तुम्हारे पास साफ़ सीना आया करूं। (سُنَنِ ابی داوٗد،کتاب الادب،٤/٣٤٨،الحدیث ٤٨٦٠)

मुह़क़्क़िक़े अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिषीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहल्वी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ह़दीषे पाक के इस ह़िस्से **"मुझे कोई सह़ाबी किसी की त़रफ़ से कोई बात न पहुंचाए"** की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : "या'नी किसी की कोताही, फ़े'ले बद, आ़दते बद, इस ने येह किया या उस ने येह कहा, फ़ुलां इस त़रह़ कह रहा था।" (اشعۃ اللّمعات،٤/٨٣) ह़दीष शरीफ़ के इस ह़िस्से **"मैं चाहता हूं कि तुम्हारे पास साफ़ सीना आया करूं"** की तशरीह़ करते हुए मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी किसी की अ़दावत, किसी से नफ़रत दिल में न हुवा करे। येह भी हम लोगों के लिये **बयाने क़ानून** है कि अपने **सीने** (मुसलमानों के **कीने** से) साफ़ रखो ताकि इन में मदीने के अन्वार देखो, वरना हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का सीनए रह़मत, नूरे करामत का गंजीना है वहां कदूरत (या'नी **बुग़्ज़** व **कीने**) की पहुंच ही नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/472)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपने दिल पर ग़ौर कर लीजिये

हर इस्लामी भाई को चाहिये कि पहली फ़ुरसत में अपने घर बार, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब, मह़ल्लादारों, मार्केट या दफ़्तर में साथ काम करने वालों, साथ पढ़ने वालों अल ग़रज़ जिन जिन से इस का वासिता पड़ता है, उन के बारे में अपने दिल को पूरी दियानतदारी से टटोले कि बिला वजहे शरई कहीं किसी की दुश्मनी तो नहीं छुपी हुई ? उसे नुक़्सान पहुंचाने की ख़्वाहिश तो मौजूद नहीं ? अगर उसे नुक़्सान पहुंचे तो ख़ुशी तो नहीं मह़सूस होती ? उस की ग़ीबत, चुग़ुल ख़ोरी, ह़क़ तलफ़ी और दिल आज़ारी का सिलसिला तो नहीं ? अगर इन सुवालात का जवाब हां में मिले तो फ़ौरन तौबा कीजिये और **कीने** से बचने के लिये कोशां हो जाइये। ग़ौरो फ़िक्र का येह अ़मल हर रोज़ नहीं तो कम अज़ कम हर हफ़्ते एक बार ज़रूर करने की **मदनी इल्तिजा** है।

हमारा मदनी मक़्सद :

मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

“राहे जन्नत” के 6 हुरूफ़ की निस्बत से कीने के 6 इलाज

﴾1﴿ ईमान वालों के कीने से बचने की दुआ कीजिये

हर इस्लामी भाई को चाहिये की ईमानवालों के **कीने** से बचने की दुआ़ करता रहे, दरजे ज़ैल मुख़्तसर क़ुरआनी दुआ़ को याद कर लेना और वक़्तन फ़ वक़्तन पढ़ना भी बहुत मुफ़ीद है। चुनान्चे पारह 28 सूरए ह़श्र की आयत 10 में है :

وَلَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۰﴾

*(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हमारे दिल में ईमान वालों की त़रफ़ से **कीना** न रख ऐ रब्ब हमारे ! बेशक तू ही निहायत मेहरबान रह़्म वाला है।)*

दुआ़ के साथ तर्जमा पढ़ने की ह़ाजत नहीं, हां ! मा’नी पर ज़रूर नज़र रखिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ अस्बाब दूर कीजिये

बीमारी जिस्मानी हो या रूह़ानी ! इस के कुछ न कुछ अस्बाब होते हैं, अगर इन अस्बाब का सद्दे बाब कर लिया जाए तो बीमारी से छुटकारा पाना आसान हो जाता है। लिहाज़ा **कीने** के चन्द मुमकिना अस्बाब और इन के ख़ातिमे का त़रीक़ा अ़र्ज़ करता हूं, चुनान्चे

पहला सबब गुस्सा

इह़्याउल उ़लूम और दीगर कई कुतुब में है कि **कीना** गुस्से की कोख से जनम लेता है। वोह इस त़रह़ कि जब कोई शख़्स गुस्से

से मग़्लूब हो कर किसी को नुक़्सान पहुंचाता है तो सामने वाला भी अपना रद्दे अ़मल देता है। यूं मुसलसल अ़मल और रद्दे अ़मल के नतीजे में दिलों में **बुग़्ज़** व **कीना** अपनी जगह बना लेता है। इस लिये अगर गुस्से को **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये पी लिया जाए तो षवाब मिलने के साथ साथ **कीने** का भी सद्दे बाब हो जाएगा, बत़ौरे तरग़ीब गुस्सा पीने की फ़ज़ीलत मुलाह़ज़ा कीजिये : चुनान्चे,

गुस्सा पीने वाले के लिये जन्नती हूर

रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है : जिस ने **गुस्से** को ज़ब्त़ कर लिया ह़ालांकि वोह इसे नाफ़िज़ करने पर क़ादिर था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस को तमाम मख़्लूक़ के सामने बुलाएगा और इख़्तियार देगा कि जिस ह़ूर को चाहे ले ले।

(سنن ابی داؤد،کتاب الادب، باب من کظم غیظاً،٤/ ٣٢٥، ٣٢٦،الحدیث ٤٧٧٧)

हुस्ने अख़्लाक़ और नर्मी दो
दूर हो ख़ूए इश्तिआ़ल[1] आक़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 359)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(1) ख़ूए इश्तिआ़ल या'नी गुस्से की आ़दत, (गुस्से के बारे में मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला "गुस्से का इलाज" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिये।)

दूसरा सबब बद गुमानी

किसी के बारे में बद गुमानी करने से भी **कीना** पैदा होना मुमकिन है। तल्मीज़े सदरुश्शरीआ़ ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस्लामी बहनों को नसीह़त के मदनी फूल देते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : "घर के अन्दर सास, नन्दें, या जेठानी, देवरानी या कोई दूसरी औ़रतें आपस में चुपके चुपके बातें कर रही हों तो औ़रत को चाहिये कि ऐसे वक़्त में उन के क़रीब न जाए और न येह जुस्तजू करे कि वोह आपस में क्या बातें कर रहीं हैं और बिला वजह येह बद गुमानी भी न करे कि कुछ मेरे ही मुतअ़ल्लिक़ बातें कर रहीं होंगी कि इस से ख़्वाह मख़्वाह दिल में एक दूसरे की त़रफ़ से **कीना** पैदा हो जाता है जो बहुत बड़ा गुनाह होने के साथ साथ बड़े बड़े फ़साद होने का सबब बन जाया करता है।"(1)

(जन्नती ज़ेवर, स. 59)

मुझे ग़ीबत व चुग़ली व बद गुमानी
की आफ़त से तू बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीसरा सबब शराब नोशी और जूआ

शराब पीने और जूआ खेलने जैसे ह़राम व जहन्नम में ले जाने वाले काम से कोसों दूर रहिये कि कुरआने पाक में इन दोनों

(1) : बद गुमानी के बारे में मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले "बद गुमानी" का ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिये।

चीजों को **कीने** का सबब क़रार दिया गया है चुनान्चे पारह 7 सूरतुल माइदह की आयत नम्बर 90 ता 91 में **अल्लाह** रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَيْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ وَ يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! शराब और जूआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में और तुम्हें **अल्लाह** की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए ?*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस के तह़्त लिखते हैं : इस आयत में शराब और **जूए** के नताइज और वबाल बयान फ़रमाए गए कि शराब खोरी और **जूए बाज़ी** का एक वबाल तो येह है कि इस से आपस में **बुग़्ज़** और अ़दावतें पैदा होती हैं और जो इन बदियों (या'नी बुराइयों) में मुब्तला हो वोह ज़िक्रे इलाही और नमाज़ के अवक़ात की पाबन्दी से मह़रूम हो जाता है।

(कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 236 मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना)

तू नशे से बाज़ आ मत पी शराब (1)
दो जहां हो जाएंगे वरना ख़राब

(वसाइले बख़्शिश, स. 669)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

चौथा सबब नेʼमतों की कषरत

नेʼमतों की फ़रावानी भी आपस में **बुग़्ज़** व **कीने** का एक सबब है, शुक्रे नेʼमत और सख़ावत की आ़दत अपना कर इस से बचना मुमकिन है। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आʼज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं ने सरकारे मदीना राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि "لَا تُفْتَحُ الدُّنْیَا عَلٰی اَحَدٍ اِلَّا اَلْقَی اللّٰہُ عَزَّ وَجَلَّ بَیْنَھُمُ الْعَدَاوَۃَ وَالْبَغْضَاءَ اِلٰی یَوْمِ الْقِیَامَۃِ" याʼनी दुन्या किसी पर कुशादा नहीं की जाती मगर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इन को ता क़ियामत **बुग़्ज़** व अ़दावत में मुब्तला फ़रमा देता है।

(مسند احمد،مسند عمر بن الخطاب رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ،١/٤٥،الحدیث:٩٣)

बुग़्ज़ व अ़दावत में पड़ जाओगे

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक मरतबा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा के पास तशरीफ़ लाए और इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम ने सुब्ह़ किस ह़ाल में की ?" इन्हों ने

(1) : शराब नोशी के नुक़्सानात के बारे में मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले "बुराइयों की मां" का ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिये।

अ़र्ज़ की : "ख़ैरो भलाई के साथ।" इरशाद फ़रमाया : "आज तुम बेहतर हो (उस वक़्त से कि) जब तुम्हारे पास सुब्ह़ खाने का एक बड़ा प्याला और शाम दूसरा बड़ा प्याला लाया जाएगा और अपने घरों पर इस त़रह़ पर्दे लटकाओगे जिस त़रह़ का'बा पर ग़िलाफ़ डाले जाते हैं।" अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा[1] رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم अ़र्ज़ गुज़ार हुए : **"या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्या हमें अपने दीन पर क़ाइम रहते हुए येह ने'मतें ह़ासिल होंगी ?" फ़रमाया : "हां" अ़र्ज़ की : "फिर तो हम उस वक़्त बेहतर होंगे क्यूंकि हम सदक़ा व ख़ैरात करेंगे और ग़ुलामों को आज़ाद करेंगे।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया لَا بَلْ اَنْتُمُ الْیَوْمَ خَیْرٌ اِنَّکُمْ اِذَا طَلَبْتُمُوْھَا تَقَاطَعْتُمْ وَتَحَاسَدْتُمْ وَتَبَاغَضْتُمْ नहीं ! बल्कि तुम आज बेहतर हो क्यूंकि जब तुम इन ने'मतों को पाओगे तो आपस में ह़सद करने लगोगे, बाहम क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ी करने की आफ़त और **बुग़्ज़** व अ़दावत में पड़ जाओगे।

(الزھد لہناد بن السری، باب معیشۃ اصحاب النبی ﷺ، ۲/۳۹۰، الحدیث ۷۶۰ وحلیۃ الاولیاء، ۱/۴۱۶، حدیث: ۱۲۰۲)

مدینہ

(1) : सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का मा'मूल था कि ज़रूरियाते ज़िन्दगी पूरी करने की जिद्दो जहद के साथ साथ मुअ़ल्लिमे आ'ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो कर इ़ल्मे दीन भी ह़ासिल किया करते थे। मगर मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले 60 से 70 सह़ाबए किराम ऐसे थे जो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरे अक़्दस पर पड़े रहते और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत में रह कर इ़ल्मे दीन सीखा करते थे। इन की रिहाइश एक छने हुए चबूतरे में थी जिसे अ़रबी में सुफ़्फ़ा कहते हैं लिहाज़ा इन नुफ़ूसे क़ुदसिया को अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा कहा जाता था। सब से ज़ियादा अह़ादीष रिवायत करने वाले सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी इन ख़ुश नसीबों में शामिल थे। रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन के अख़राजात के कफ़ील थे।

(ماخوذ از مرآۃ المناجیح شرح مشکوۃ المصابیح، ۷/۳۵)

आपस में बुग़्ज़ व अ़दावत जड़ पकड़ लेती है

जब आले किस्रा के ख़ज़ानों को अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के पास लाया गया तो आप रोने लगे, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ किस चीज़ ने आप को रुलाया है ? आज तो शुक्र का दिन है, फ़रह़त व सुरूर का दिन है। हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : مَا کَثُرَ هٰذَا عِنْدَ قَوْمٍ اِلَّا اَلْقَی اللّٰهُ بَیْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَاءَ या'नी जिस क़ौम के पास भी इस (माल) की कषरत हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को **बुग़्ज़** व **अ़दावत** में मुब्तला फ़रमा देता है ।

(المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الزهد،باب کلام عمر بن الخطاب،١٤٧/٨،الحدیث:٥،ملخصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿ सलाम व मुसाफ़ह़ा की आ़दत बना लीजिये

मुसलमान से मुलाक़ात के वक़्त सलाम व मुसाफ़ह़ा करने की बड़ी फ़ज़ीलत है नीज़ आपस में हाथ मिलाने से **कीना** ख़त्म होता है और एक दूसरे को तोह़फ़ा देने से मह़ब्बत बढ़ती और अ़दावत दूर होती है, नबिय्ये मुकर्रम , नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : تَصَافَحُوْا یَذْهَبِ الْغِلُّ وَ تَهَادَوْا تَحَابُّوْا وَتَذْهَبِ الشَّحْنَاءُ मुसाफ़ह़ा किया करो **कीना** दूर होगा और तोह़फ़ा दिया करो मह़ब्बत बढ़ेगी और **बुग़्ज़** दूर होगा।

(موطأ امام مالك،كتاب حسن الخلق،٢/٤٠٧،الحديث:١٧٣١)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الۡحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : येह दोनों अ़मल बहुत ही मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा) हैं जिस से मुसाफ़ह़ा करते रहो उस से दुश्मनी नहीं होती। अगर इत्तिफ़ाक़न कभी हो भी जाए तो इस की बरकत से ठहरती नहीं। यूं ही एक दूसरे को हदिय्या देने से अ़दावतें ख़त्म हो जाती हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/368)

मदनी फूल : मुसाफ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रूमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़स्सा. 16, स. 471 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾4﴿ बेजा सोचना छोड़ दीजिये

बा'ज़ हुकमा का क़ौल है : "तीन चीज़ों में ग़ौर न कर (1) अपनी मुफ़्लिसी व तंग दस्ती (और मुसीबत) पर, इस लिये कि इस में ग़ौर करते रहने से तेरे ग़म (और टेन्शन) में इज़ाफ़ा और ह़िर्स में ज़ियादती होगी (2) तेरे ऊपर ज़ुल्म करने वाले के ज़ुल्म पर ग़ौर न कर कि इस से तेरे दिल में **कीना** बढ़ेगा और ग़ुस्सा बाक़ी रहेगा (3) दुन्या में ज़ियादा देर ज़िन्दा रहने के बारे में न सोच कि इस तरह़ तू माल जम्अ़ करने में अपनी उ़म्र ज़ाएअ़ कर देगा और अ़मल के मुआ़मले में टालम टोल (ٹالَم۔ٹول) से काम लेगा।" लिहाज़ा हमें चाहिये कि दुन्यावी तफ़क्कुरात (تَ۔فَکْ۔کُرات) में जान खपाने के बजाए आख़िरत के मुआ़मलात में इस तरह़ मुन्हमिक

हो जाएं जैसा कि हमारे अस्लाफ़ رحمهم الله تعالی का मदनी अन्दाज़ था।

(ख़ुदकुशी का इलाज, स. 50)

करें न तंग ख़यालाते बद कभी, कर दे
शुऊर व फ़िक्र को पाकीज़गी अ़ता या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾5﴿ मुसलमानों से अल्लाह की रिज़ा के लिये महब्बत कीजिये

महब्बत **कीने** की ज़िद (या'नी उलट) है लिहाज़ा अगर हम रिज़ाए इलाही के लिये अपने मुसलमान भाई से महब्बत रखें तो **कीने** को दिल में आने की जगह नहीं मिलेगी और हमें दीगर फ़वाइद व फ़ज़ाइल भी ह़ासिल होंगे। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم है : जो कोई अपने मुसलमान भाई की त़रफ़ महब्बत भरी नज़र से देखे और उस के दिल या सीने में अ़दावत न हो तो निगाह लौटने से पहले दोनों के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे। (شعب الایمان، ٥/ ٢٧٠، الحدیث ٦٦٢٤)

मेरे जिस क़दर हैं अह़बाब उन्हें कर दें शाह बेताब
मिले इश्क़ का ख़ज़ाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 288)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾6﴿ दुन्यावी चीज़ों की वजह से बुग़्ज़ व कीना रखना अ़क़्लमन्दी नहीं

कीने की बुन्याद उ़मूमन दुन्यावी चीज़ें होती हैं, लेकिन सोचने की बात है कि क्या दुन्या की वजह से अपनी आख़िरत

बरबाद कर लेना दानिशमन्दी है ? एक सबक़ आमोज़ रिवायत मुलाहज़ा कीजिये : चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने इरशाद फ़रमाया : "बरोज़े क़ियामत दुन्या को एक बद सूरत नीली आंखों वाली बुढ्ढी औ़रत के रूप में लाया जाएगा जिस के (डरावने) दांत नज़र आ रहे होंगे और वोह तमाम इन्सानों के सामने हो जाएगी, उन से पूछा जाएगा : "क्या तुम इस को जानते हो ?" वोह जवाब देंगे । "हम इस की पहचान से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं ।" तो कहा जाएगा : "**येही वोह दुन्या है जिसे ह़ासिल करने के लिये तुम एक दूसरे का ख़ून बहाते थे, इस को पाने के लिये क़त़ए़ रेह़मी (या'नी रिश्तेदारी तोड़ दिया) करते थे, इस की ख़ात़िर एक दूसरे पर ग़ुरूर और ह़सद करते थे और इसी के लिये एक दूसरे से बुग़्ज़ रखते थे ।**" फिर दुन्या को बुढ्ढी औ़रत के रूप में जहन्नम में डाल दिया जाएगा तो वोह कहेगी : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे चाहने वाले, मेरे पीछे आने वाले कहां गए ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "इस के पीछे भागने वालों और चाहने वालों को भी इस के पास (जहन्नम में) पहुंचा दो ।"

(شعب الایمان للبیھقی ۷/۳۸۳،حدیث:۱۰۶۷۱)

न हों अश्क बरबाद दुन्या के ग़म में
मुह़म्मद के ग़म में रुला या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपने बच्चों को भी बुग़्ज़ व कीने से बचाइये

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : बेशक **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पसन्द करता है कि तुम अपनी अवलाद के दरमियान बराबरी का सुलूक करो ह़त्ता कि बोसा लेने में भी (बराबरी करो)।

(الجامع الصغیر، ص۱۱۷ حدیث۱۸۹۵)

मां-बाप को चाहिये कि एक से ज़ाइद बच्चे होने की सूरत में इन्हें कोई चीज़ देने और प्यार महब्बत और शफ़्क़त में बराबरी का उसूल अपनाएं। बिला वजहे शरई किसी बच्चे बिल ख़ुसूस बेटी को नज़र अन्दाज़ कर के दूसरे को इस पर तरजीह़ न दें कि इस से बच्चों के नाज़ुक क़ुलूब पर **बुग़्ज़** व ह़सद की तह जम सकती है जो इन की शख़्सी ता'मीर के लिये निहायत नुक़्सान देह है। मुअ़ल्लिमे अख़्लाक़ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें अवलाद में से हर एक के साथ मुसावी सुलूक करने की ताकीद फ़रमाई है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने मुझे अपना कुछ माल दिया तो मेरी वालिदा ह़ज़रते अम्र बिन्ते रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने कहा : मैं उस वक़्त तक राज़ी न होऊंगी जब तक कि आप इस पर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को गवाह न कर लें। चुनान्चे मेरे वालिद मुझे शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले गए ताकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मुझे दिये गए सदक़े पर गवाह कर लें। सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन से पूछा : क्या तुम ने अपने तमाम बेटों के साथ ऐसा ही किया है ? मेरे वालिदे मोह़तरम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने

अ़र्ज़ की : "नहीं।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला से डरो और अपनी अवलाद में इन्साफ़ करो। येह सुन कर वोह वापस लौट आए और वोह सदक़ा वापस ले लिया।

(صحیح مسلم،کتاب الھبات ،باب کراھۃ تفضیل بعض الاولاد فی الھبۃ،الحدیث۱۶۲۳،ص۸۷۸)

छोटी बहन को क़त्ल कर डाला

पंजाब (पाकिस्तान) के शहर का एक सच्चा वाक़िआ़ है कि एक घराने में बेटा पैदा हुवा, जो सब घरवालों की आंख का तारा था, वालिदैन उस पर जान छिड़कते थे। कुछ ही अ़रसे बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें बेटी से नवाज़ा तो वोह सब घरवालों की निगाहों का मर्कज़ बन गई जिस के नतीजे में बेटे की त़रफ़ तवज्जोह कम हो गई। येह कोई बड़ी बात नहीं थी मगर बेटा इस बात को शिद्दत से महसूस करने लगा कि अब मेरे नाज़ नख़रे नहीं उठाए जाते बल्कि छोटी बहन को ही लाड़ प्यार किया जाता है। बढ़ते बढ़ते येह एह़सास **बुग़्ज़** व **कीने** और ह़सद में तब्दील हो गया। अब वोह वक़्तन फ़ वक़्तन छोटी बहन को मारने पीटने लगा था और नित नए त़रीक़ों से उसे तंग करने की कोशिश करता। वालिदैन ने इसे मा'मूली बात समझा और नज़र अन्दाज़ किया। कई साल यूंही गुज़र गए, फिर एक दिन ऐसा दिल ख़राश वाकिआ़ पेश आया जिस ने शहर वालों को हिला कर रख दिया। हुवा यूं कि भाई ने घरवालों को बताए बिग़ैर छोटी बहन को सैर के बहाने साईकल पर बिठाया और नहर की त़रफ़ ले गया और वहां जा कर बहन को नहर में धक्का दे दिया, वोह "भय्या ! बचाओ, भय्या ! बचाओ" की आवाजें लगाती रही मगर उस पर संगदिली ग़ालिब आ चुकी थी

बल्कि वोह इतनी दूर तक नहर किनारे साथ साथ चलता रहा जब तक उस के डूबने का यक़ीन नहीं हो गया। फिर वोह घर वापस लौट आया और दिल ही दिल में ख़ुश था कि अब सब सिर्फ़ और सिर्फ़ मुझे प्यार करेंगे। जब घरवालों को बच्ची कहीं दिखाई न दी तो उस की तलाश शुरूअ़ हुई। ए'लानात करवाए गए, शहर का चप्पा चप्पा छान मारा मगर बच्ची न मिली। पूलीस को भी इत्तिलाअ़ दे दी गई। तफ़्तीश शुरूअ़ हुई तो तीसरे ही रोज़ बच्चे ने राज़ उगल दिया कि किस त़रह़ और किस वजह से उस ने अपनी छोटी बहन को मौत के घाट उतारा था। जिस ने भी सुना वोह सकते में आ गया, वालिदैन पर तो गोया क़ियामत टूट पड़ी थी, बेटी तो दुन्या से जा ही चुकी थी अब बेटा भी सलाख़ों के पीछे जाता दिखाई दे रहा था लिहाज़ा उसे मुआ़फ़ कर के क़ानून से रिहाई दिलवा दी गई।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अगर कोई हम से कीना रखता हो तो क्या करना चाहिये ?

बा'ज़ अवक़ात किसी इस्लामी भाई को सुनी सुनाई बातों की बुनयाद पर येह ख़याल सताने लगता है कि फ़ुलां शख़्स मुझ से **कीना** रखता है या ह़सद करता है ह़ालांकि ऐसा कुछ भी नहीं होता मह़ज़ उस की बद गुमानी या वहम होता है। क्यूंकि **कीना** हो या ह़सद ! इस का तअ़ल्लुक़ बात़िन से है और किसी की बात़िनी कैफ़िय्यात का यक़ीनी पता चलाना हमारे इख़्तियार में नहीं है। इस लिये हुस्ने ज़न की आ़दत बना ली जाए कि हुस्ने ज़न में कोई नुक़्सान नहीं और बद गुमानी में कोई फ़ाइदा नहीं। हां ! अगर किसी की ह़रकात व सक्नात और बुरे सुलूक से आप को वाज़ेह़ तौ़र

पर महसूस हो कि येह मुझ से **कीना** रखता है तो भी अ़फ़्व व दर गुज़र से काम लीजिये और हुस्ने सुलूक से उस की दुश्मनी को दोस्ती में बदलने की कोशिश कीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی लिखते हैं : जिस के साथ **कीना** बरता गया उस की तीन ह़ालतें हैं : (1) उस का वोह ह़क़ पूरा किया जाए जिस का वोह मुस्तह़िक़ है और उस में किसी क़िस्म की कमी ज़ियादती न की जाए इसे अ़द्ल कहते हैं और येह सालिह़ीन का इन्तिहाई दर्जा है। (2) अ़फ़्व व दर गुज़र और सिलए रेह़्मी के ज़रीए उस के साथ नेकी की जाए येह सिद्दीक़ीन का त़र्ज़े अ़मल है। (3) उस के साथ ऐसी ज़ियादती करना जिस का वोह मुस्तह़िक़ नहीं येह ज़ुल्म है और कमीने लोगों का त़रीक़ा है।

(احیاء العلوم، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، ۳/ ۲۲٤)

बचा लो ! नारे दोज़ख़ से बिचारे ह़ासिदों को भी
मैं क्यूं चाहूं किसी की भी बुराई या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 247)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़त्ह़े मक्का के दिन आ़म मुआ़फ़ी का ए'लान कर दिया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 869 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**सीरते मुस्त़फ़ा**" के सफ़ह़ा 438 पर है : फ़त्ह़े मक्का के बा'द ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने शहनशाहे इस्लाम की ह़ैषिय्यत से ह़रमे इलाही में सब से पहला दरबारे आ़म मुन्अ़क़िद फ़रमाया जिस में अफ़्वाजे इस्लाम के इलावा हज़ारों कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के ख़वास व

अ़वाम का एक ज़बरदस्त इज़्दह़ाम (या'नी हुजूम) था। शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस हज़ारों के मजमए़ में एक गहरी निगाह डाली तो देखा कि सर झुकाए, निगाहे नीची किये हुए लरज़ां व तरसां अशराफ़े कुरैश खड़े हुए हैं। इन ज़ालिमों और जफ़ाकारों में वोह लोग भी थे जिन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रास्तों में कांटे बिछाए थे। वोह लोग भी थे जो बारहा आप पर पथ्थरों की बारिश कर चुके थे। वोह ख़ूख़्वार भी थे जिन्हों ने बार बार आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ातिलाना ह़म्ले किये थे। वोह बे रह़्म व बे दर्द भी थे जिन्हों ने आप के दन्दाने मुबारक को शहीद और आप के चेहरए अन्वर को लहूलुहान कर डाला था। वोह औबाश भी थे जो बरसहा बरस तक अपनी बोहतान तराशियों और शर्मनाक गालियों से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ल्बे मुबारक को ज़ख़्मी कर चुके थे। वोह सफ़्फ़ाक व दरन्दा सिफ़त भी थे जो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के गले में चादर का फंदा डाल कर आप का गला घोंट चुके थे। वोह ज़ुल्मो सितम के मुजस्समे और पाप के पुतले भी थे जिन्हों ने आप की साह़िबज़ादी ह़ज़रते (सय्यिदतुना) ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को नेज़ा मार कर ऊंट से गिरा दिया था और उन का ह़म्ल साक़ित़ हो गया था। आप के ख़ून के वोह प्यासे भी थे जिन की तिशना लबी और प्यास ख़ूने नबुव्वत के सिवा किसी चीज़ से नहीं बुझ सकती थी। वोह जफ़ाकार व ख़ूख़्वार भी थे जिन के जारिह़ाना ह़म्लों और ज़ालिमाना यलग़ार से बार बार मदीनए मुनव्वरा के दरो दीवार दहल चुके थे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे चचा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़ातिल और उन की नाक, कान काटने वाले, उन की आंखें फोड़ने वाले, उन का जिगर चबाने वाले भी इस

मज्मअ़ में मौजूद थे। वोह सितमगार जिन्हों ने शम्ए़ नबुव्वत के जां निषार परवानों ह़ज़रते बिलाल, ह़ज़रते सोहेब, ह़ज़रते अ़म्मार, ह़ज़रते ख़ब्बाब, ह़ज़रते ख़ुबैब, ह़ज़रते ज़ैद बिन दषाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم वग़ैरा को रस्सियों से बांध बांध कर कोड़े मार मार कर जलती हुई रेतों पर लिटाया था, किसी को आग के दहकते हुए कोइलों पर सुलाया था, किसी को चटाइयों में लपेट लपेट कर नाकों में धूएं दिये थे, सेंकड़ों बार गला घोंटा था। येह तमाम जोरो जफ़ा और ज़ुल्म व सितमगारी के पैकर, जिन के जिस्म के रोंगटे रोंगटे और बदन के बाल बाल ज़ुल्म व उ़दवान और सरकशी व तुग़्यान के वबाल से ख़ौफ़नाक जुर्मों और शरमनाक मज़ालिम के पहाड़ बन चुके थे। आज येह सब के सब दस बारह हज़ार मुहाजिरीन व अन्सार के लश्कर की ह़िरासत में मुजरिम बने हुए खड़े कांप रहे थे और अपने दिलों में येह सोच रहे थे कि शायद आज हमारी लाशों को कुत्तों से नोचवा कर हमारी बोटियां चीलों और कव्वों को खिला दी जाएंगी और अन्सार व मुहाजिरीन की ग़ज़ब नाक फ़ौजें हमारे बच्चे बच्चे को ख़ाक व ख़ून में मिला कर हमारी नस्लों को नेस्तो नाबूद कर डालेंगी और हमारी बस्तियों को ताख़्त व ताराज कर के तहस नहस कर डालेंगी इन मुजरिमों के सीनों में ख़ौफ़ व हिरास का तूफ़ान उठ रहा था। दहशत और डर से इन के बदनों की बोटी बोटी फड़क रही थी, दिल धड़क रहे थे, कलेजे मुंह में आ गए थे और आ़लमे यास में इन्हें ज़मीन से आस्मान तक धुएं ही धुएं के ख़ौफ़नाक बादल नज़र आ रहे थे। इसी मायूसी और ना उम्मीदी की ख़त़रनाक फ़ज़ा में एक दम शहनशाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे रह़मत इन पापियों की त़रफ़ मुतवज्जेह हुई और इन मुजरिमों से आप ने पूछा :

"बोलो ! तुम को कुछ मा'लूम है कि आज मैं तुम से क्या मुआ़मला करने वाला हूं ?"

इस दहशत अंगेज़ और ख़ौफ़नाक सुवाल से मुजरिमीन ह़वास बाख़्ता हो कर कांप उठे लेकिन जबीने रह़मत के पैग़म्बराना तेवर को देख कर उम्मीद व बीम के मेह़शर में लरज़ते हुए सब यक ज़बान हो कर बोले : "اَخٌ كَرِيْمٌ وَابْنُ اَخٍ كَرِيْمٍ" आप करम वाले भाई और करम वाले बाप के बेटे हैं। सब की ललचाई हुई नज़रें जमाले नबुव्वत का मुंह तक रही थीं और सब के कान शहनशाहे नबुव्वत का फ़ैसला कुन जवाब सुनने के मुन्तज़िर थे कि एक दम दफ़्अ़तन फ़ातेह़े मक्का ने अपने करीमाना लहजे में इरशाद फ़रमाया :

لَاتَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ فَاذْهَبُوْا اَنْتُمُ الطُّلَقَاءُ

आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो ।

(المواهب اللدنية و شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الاعظم، ٣/٤٤٩ ملخصًا)

बिलकुल ग़ैर मुतवक़्क़ेअ़ त़ौर पर एक दम अचानक येह फ़रमाने रिसालत सुन कर सब मुजरिमों की आंखें फरते़ नदामत से अश्कबार हो गईं और उन के दिलों की गहराइयों से जज़्बाते शुक्रिया के आषार आंसूओं की धार बन कर उन के रुख़्सार पर मचलने लगे और कुफ़्फ़ार की ज़बानों पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ के ना'रों से ह़रमे का'बा के दरो दीवार पर हर त़रफ़ अन्वार की बारिश होने लगी । नागहां बिल्कुल ही अचानक और दफ़्अ़तन एक अ़जीब इन्क़िलाब बर्पा हो गया कि समां ही बदल गया, फ़ज़ा ही पलट गई और एक दम ऐसा मह़सूस होने लगा कि

जहां तारीक था, बे नूर था और सख़्त काला था

कोई पर्दे से क्या निकला कि घर घर में उजाला था

(सीरते मुस्तफ़ा, स. 438 ता 441)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बुग़्ज़ व इनाद महब्बत में बदल गया

हमारे मदनी सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के किरदार व अ़मल की बुलन्दियां देख कर आप के दुश्मन भी बिल आख़िर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़द दर्जा महब्बत करने लगते थे, इस की तीन झलकियां मुलाह़ज़ा कीजिये :

﴿1﴾ ह़ज़रते षमामा बिन उषाल यमामी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो अहले यमामा के सरदार थे ईमान ला कर कहने लगे : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम मेरे नज़दीक रूए ज़मीन पर कोई चेहरा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरे से ज़ियादा मबग़ूज़ न था। आज वोही चेहरा मुझे सब चेहरों से ज़ियादा महबूब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम मेरे नज़दीक कोई दीन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन से ज़ियादा बुरा न था अब वोही दीन मेरे नज़दीक सब दीनों से ज़ियादा महबूब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम मेरे नज़दीक कोई शहर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के शहर से ज़ियादा मबग़ूज न था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम अब वोही शहर मेरे नज़दीक सब शहरों से ज़ियादा महबूब है।" (صحیح البخاری،کتاب المغازی،باب وفد بنی حنیفة،۳/۱۳۱،الحدیث۴۳۷۲)

﴾2﴿ ह़ज़रते हिन्द बिन्ते उ़तबा (ज़ौजए अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا जो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा का कलेजा चबा गई थीं, ईमान ला कर कहने लगीं : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा मेरी निगाह में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मबग़ूज़ न थे लेकिन आज मेरी निगाह में रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मह़बूब नहीं ।"

(صحیح البخاری،کتاب مناقب الانصار،باب ذکر ھند بنت عتبۃ،۲/۵۶۷،الحدیث۳۸۲۵)

﴾3﴿ ह़ज़रते सफ़वान बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का बयान है कि हुनैन के दिन **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे माल अ़त़ा फ़रमाया, ह़ालांकि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी नज़र में मबग़ूज़ तरीन ख़ल्क़ थे । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे अ़त़ा फ़रमाते रहे यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी नज़र में मह़बूब तरीन ख़ल्क़ हो गए । (جامع الترمذی،کتاب الزکاۃ،باب ماجاء فی اعطاء المؤلفۃ قلوبھم،ج۲،ص۱۴۷،الحدیث۶۶۶)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुग़्ज़ व इ़नाद रखने वाला यहूदी कैसे मुसलमान हुवा ?

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الۡمُبِیۡن भी नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नक़्शे क़दम पर चलते हुए **बुग़्ज़** व **कीना** रखने वालों के बुरे सुलूक पर ऐसा सब्र फ़रमाते थे कि बिल आख़िर

सामने वाला शर्मिन्दा हो कर **बुग़्ज़** व **कीने** से रिहा हो कर उन की महब्बत व उल्फ़त में गिरिफ़्तार हो जाता था। बतौरे मिषाल एक हिकायत मुलाहज़ा कीजिये : चुनान्चे

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने एक मकान किराए पर लिया। उस मकान के बिल्कुल मुत्तसिल एक यहूदी का मकान था। वोह यहूदी **बुग़्ज़** व इनाद की बुन्याद पर परनाले के ज़रीए गंदा पानी और ग़लाज़त आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के काशानए अ़ज़मत में डालता रहता मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ामोश ही रहते। आख़िरे कार एक दिन उस ने ख़ुद ही आ कर अ़र्ज़ की : जनाब ! मेरे परनाले से गिरने वाली नजासत की वजह से आप को कोई शिकायत तो नहीं ? आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने निहायत ही नर्मी के साथ फ़रमाया : परनाले से जो गंदगी गिरती है उस को झाड़ू दे कर धो डालता हूं। उस ने कहा : आप को इतनी तक्लीफ़ होने के बा वुजूद गुस्सा नहीं आता ? फ़रमाया : आता तो है मगर पी जाता हूं क्यूंकि ख़ुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने महब्बत निशान है :

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾ (پ ۴، اٰل عمران:۱۳۴)

*(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दरगुज़र करने वाले और नेक लोग **अल्लाह** के महबूब हैं।)*

येह जवाब सुन कर वोह यहूदी मुसलमान हो गया।

(तज़्किरतुल औलिया, स. 51)

निगाहे वली में वोह ताषीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुझे आप से बुग़्ज़ था

मशहूर सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अबूद्दरदा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की कनीज़ ने एक दिन अ़र्ज की : हुज़ूर ! सच बताइये कि आप इन्सान हैं या जिन्न ? फ़रमाया : اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं इन्सान ही हूं। कहने लगी : मुझे तो इन्सान नहीं लगते क्यूंकि मैं चालीस दिन से लगातार आप को ज़हर खिला रही हूं मगर आप का बाल तक बीका नहीं हुवा ! फ़रमाया : क्या तुझे मा'लूम नहीं जो लोग हर ह़ाल में ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करते रहते हैं उन को कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और मैं इस्मे आ'ज़म के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता हूं। पूछा : वोह इस्मे आ'ज़म कौन सा है ? फ़रमाया (मैं हर बार खाने पीने से क़ब्ल येह पढ़ लिया करता हूं)।

بِسۡمِ اللّٰہِ الَّذِیۡ لَا یَضُرُّ مَعَ اسۡمِہٖ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ وَ لَا فِی السَّمَاءِ وَھُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡم

(या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की बरकत से ज़मीनो आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वोह सुनने वाला जानने वाला है)

इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तू ने किस वजह से मुझे **ज़हर** दिया ? अ़र्ज़ की : मुझे आप से **बुग़्ज़** था। येह जवाब सुनते ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया, तू लि वजहिल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये) आज़ाद है और तू ने मेरे साथ जो कुछ किया वोह भी मैं ने तुझे मुआ़फ़ किया।

(حَیاۃُ الحَیوان الکُبرٰی، ۱/ ۳۹۱)

सहाबए किराम عَلَيهِمُ الرِّضْوَان की अ़ज़मतों سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ के क्या कहने ! येह ह़ज़रात हुक्मे कु़रआनी, اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *बुराई को भलाई से टाल* (پ ۲٤ حٰـم السـجـده ۳٤)) की सह़ीह़ तफ़्सीर थे, बार बार ज़हर पिलाने वाली कनीज़ को सज़ा दिलवाने के बजाए आज़ाद फ़रमा दिया !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कीना रखने वाले से भी फ़ाइदा ह़ासिल किया जा सकता है

अ़क़्लमन्द इन्सान चश्म पोशी करने वाले दोस्त से ज़ियादा **कीना** परवर दुश्मन से नफ़्अ़ ह़ासिल कर सकता है । इस का त़रीक़ा बयान करते हुए इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى लिखते हैं : अपने दुश्मनों से अपने उ़यूब सुने क्यूंकि दुश्मन की आंख हर ऐ़ब को ज़ाहिर कर देती है, अ़क़्लमन्द इन्सान **कीना** परवर दुश्मन से अपने उ़यूब सुन कर ऐसे चश्म पोशी करने वाले दोस्त से ज़ियादा नफ़्अ़ ह़ासिल कर सकता है जो उस की ता'रीफ़ व तौसीफ़ करता रहता है और उस के ऐ़ब छुपाता रहता है मगर मुसीबत येह है कि इन्सानी त़बाएअ़ दुश्मन की बात को झूट और ह़सद पर मब्नी ख़याल करती हैं लेकिन अ़क़्लमन्द दुश्मनों की बातों से भी सबक़ सीखते हैं और अपने उ़यूब की तलाफ़ी करते हैं कि आख़िर कोई ऐ़ब तो ज़रूर है जो उस के दुश्मन की निगाह में है।

(مكاشفة القلوب، الباب السادس والسبعون، ص۲۰۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूसरों को अपने कीने से बचाने के त़रीक़े

क्या ही अच्छा हो अगर हम ऐसी बातों से बचें जिन की वजह से लोग **कीने** में मुब्तला हो जाते हैं, इस ज़िम्न में **10 मदनी फूल** मुलाह़ज़ा कीजिये :

﴾1﴿ किसी की बात काटने से बचिये

किसी की बात काटना आदाबे गुफ़्तगू के ख़िलाफ़ है और जिस की बात काटी जाए वोह **कीने** में भी मुब्तला हो सकता है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का इरशाद है : किसी बे वुक़ूफ़ की बात न काटो कि वोह तुम्हें अज़िय्यत देगा और किसी अ़क़्लमन्द की बात न काटो कि वोह तुम से **बुग़्ज़** रखेगा। (احیاء العلوم، ۲/ ۲۲٤)

﴾2﴿ ता'ज़िय्यत के दौरान मुस्कुराने से बचिये

किसी ग़मज़दा की ता'ज़िय्यत करना बड़ी अच्छी बात है लेकिन ऐसे मौक़अ़ पर मुस्कुराने से बचिये क्यूं कि ऐसे मौक़अ़ पर मुस्कुराना दिलों में **बुग़्ज़** व **कीना** पैदा करता है।

(مجموعہ رسائل امام غزالی، رسالہ الادب فی الدین ص٤٠٩)

﴾3﴿ किसी की ग़लती निकालने में एह़तियात़ कीजिये

किसी की गुफ़्तगू में से तलफ़्फ़ुज़ या ग्रामर की ग़लती निकालने में भी एह़तियात़ करनी चाहिये क्यूंकि इस से भी सामने वाले के दिल में **कीना** पैदा हो सकता है : ग़ालिबन इसी ह़िक्मत के पेशे नज़र बहारे शरीअ़त में येह शरई मस्अला बयान किया गया है : जो शख़्स (क़ुरआन) ग़लत़ पढ़ता हो तो सुनने वाले पर वाजिब है कि बता दे, बशर्ते कि बताने की वजह से **कीना** व ह़सद पैदा न हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 ह़िस्सा. 3 स. 553)

﴾4﴿ मौक़अ़ महल के मुताबिक़ अ़मल कीजिये

जिस मक़ाम पर जिन मवाफ़िक़े शरअ़ आदाब या मुस्तह़ब्बात पर अ़मल करने का रवाज हो वहां इस से हट कर अ़मल करना भी लोगों के दिल में **बुग़्ज़** व **कीना** पैदा कर सकता है। चुनान्चे बहारे शरीअ़त में है : जहां येह अन्देशा हो कि ता'ज़ीम के लिये अगर खड़ा न हुवा तो उस के दिल में **बुग़्ज़** व अ़दावत पैदा होगा, ख़ुसूसन ऐसी जगह जहां क़ियाम का रवाज है तो क़ियाम करना चाहिये ताकि एक मुस्लिम को **बुग़्ज़** व अ़दावत से बचाया जाए।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, ह़िस्सा. 16 स. 473)

﴾5﴿ मश्वरा बुग़्ज़ व कीने को काफ़ूर करता है

जहां बहुत सारे अफ़्राद किसी काम में शामिल हों वहां मश्वरा करना कुरबत का बाइ़ष है। मश्वरा करना ऐसा मुबारक फ़े'ल है कि इस से वोह शख़्स जिस से मश्वरा किया जाए अपनी क़द्रो क़ीमत और तकरीम व अहम्मिय्यत महसूस कर के मसरूर होगा और उस की मश्वरा लेने वाले से वाबस्तगी व कुरबत बढ़ेगी। बल्कि अगर नाराज़ इस्लामी भाई से मश्वरा किया जाए तो येह मश्वरा करना उस का **बुग़्ज़** व **कीना** काफ़ूर और नाराज़ी दूर कर के दिल में लुत्फ़ व महब्बत का नूर पैदा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(मदनी कामों की तक़्सीम, स. 42)

﴾6﴿ किसी की इस्लाह़ करने का अन्दाज़ महब्बत भरा होना चाहिये

मीठे मीठे मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जब किसी की बात पहुंचती जो ना गवार गुज़रती तो उस का पर्दा रखते हुए उस

की इस्लाह़ का येह ह़सीन अन्दाज़ होता कि इरशाद फ़रमाते : مَا بَالُ اَقْوَامٍ يَقُوْلُوْنَ كَذَا وَكَذَا या'नी लोगों को क्या हो गया जो ऐसी बात कहते हैं।

(سُنَن ابی داوٗد،کتا ب الادب ،باب فی حسن العشرة،٤/ ٣٢٨ الحدیث٤٧٨٨)

काश ! हमें भी इस्लाह़ का ढंग आ जाए, हमारा तो अकषर येह ह़ाल होता है कि अगर किसी को समझाना भी हो तो बिला ज़रूरते शरई सब के सामने नाम ले कर या उसी की त़रफ़ देख कर इस त़रह़ समझाएंगे कि बेचारे की पोलें भी खोल कर रख देंगे। अपने ज़मीर से पूछ लीजिये कि येह समझाना हुवा या अगले को ज़लील (DEGRADE) करना हुवा ? इस त़रह़ सुधार पैदा होगा या मज़ीद बिगाड़ बढ़ेगा ? याद रखिये ! अगर हमारे रो'ब से सामने वाला चुप हो गया या मान गया तब भी उस के दिल में ना गवारी सी रह जाएगी जो कि **बुग़्ज़** व **कीना**, ग़ीबत व तोहमत वग़ैरा के दरवाज़े खोल सकती है। ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : जिस किसी ने अपने भाई को ए'लानिया नसीह़त की उस ने उसे ऐब लगाया और जिस ने चुपके से की तो उसे ज़ीनत बख़्शी। (شُعَبُ الْاِیمان،باب فی التعاون علی البروالتقوٰی، ٦/ ١١٢،الرقم٧٦٤١)

अलबत्ता अगर पोशीदा नसीह़त नफ़्अ़ न दे तो फिर (मौक़अ़ और मन्सब की मुनासबत से) ए'लानिया नसीह़त करे।

(تَنبِیهُ الْغافِلین ص٤٩) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 160)

﴾7﴿ रिश्ते पर रिश्ता न भेजिये

बा'ज़ अवक़ात ऐसा होता है कि दो घरानों के दरमियान रिश्ते की बात चल रही होती है कि कोई तीसरा भी बीच में पहुंच

जाता है, या दो अफ़राद के दरमियान ख़रीदो फ़रोख़्त की बात हो रही होती है तो कोई तीसरा उस में कूद पड़ता है ऐसी सूरत में फ़ाइदे से महरूम होने वाला फ़रीक़ बना बनाया काम बिगाड़ देने वाले के **बुग़्ज़** व **कीने** में मुब्तला हो जाता है। लिहाज़ा इस क़िस्म के मुआ़मलात में दख़्ल अन्दाज़ी से परहेज़ करना चाहिये।

﴾8﴿ ख़्वाह मख़्वाह हौसला शिकनी न कीजिये

हौसला अफ़्ज़ाई हर किसी को अच्छी लगती है चाहे उसे ढंग से काम करना आता हो या न आता हो, इस के बर अ़क्स बा'ज़ इस्लामी भाइयों के काम पर मुषबत और ता'मीरी तन्क़ीद भी की जाए तो वोह इसे हौसला शिकनी तसव्वुर करते हैं और दिल में तन्क़ीद करने वाले को बुरा जानते है, इस लिये हर किसी के काम पर तन्क़ीद करने से बचना ही बेहतर है, हां ! अगर वोह ख़ुद तन्क़ीद की दरख़्वास्त करे तो भी मोहतात़ अन्दाज़ ही अपनाया जाए, मषलन पहले उस के काम की ख़ूबियां शुमार करवा कर हौसला अफ़्ज़ाई कर दी जाए फिर ख़ामियों और इस्लाह़ त़लब पहलूओं पर मुनासिब अल्फ़ाज़ में इज़हारे ख़याल कर दिया जाए। लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो इस ह़िक्मते अ़मली को समझ नहीं पाते और हर किसी को जारिहाना तन्क़ीद का निशाना बना कर अपने दुश्मनों में इज़ाफ़ा करते रहते हैं, ऐसों को भी अपने तरज़े अ़मल पर ग़ौरो फ़िक्र की सख़्त ह़ाजत है।

﴾9﴿ दूसरों को न झाड़िये

वक़्त बे वक़्त किसी को टोकते रहने, डांट पिला देने या झाड़ने की आ़दत से मुमकिन है कि सामने वाला हमारे **कीने** में मुब्तला हो जाए, ऐसा करने से भी बचिये। इस बात को एक ह़िकायत से समझने की कोशिश कीजिये : चुनान्चे

दूर ही से शराइत़ दिखाने वाला नोकर

एक नक चढ़ा रईस अपने नोकरों को वक़्त बे वक़्त डांटता झाड़ता रहता था जिस की वजह से नोकरों के दिल में उस की अ़दावत बैठ चुकी थी। उस रईस ने हर नोकर को उस की ज़िम्मेदारियों की तह़रीरी लिस्ट (List) बना कर दी हुई थी। अगर कोई नोकर कभी कोई काम छोड़ देता तो रईस उसे वोह लिस्ट दिखा दिखा कर ज़लील करता। एक मरतबा वोह घुड़ सुवारी का शौक़ पूरा कर के घोड़े से उतर रहा था कि उस का पाऊं रिकाब में उलझ गया इसी दौरान घोड़ा भाग खड़ा हुवा, अब रईस उल्टा लटका घोड़े के साथ साथ घिसट रहा था। उस ने पास खड़े नोकर को मदद के लिये पुकारा मगर उसे तो बदला चुकाने का मौक़अ़ मिल गया था, चुनान्चे उस ने अपने मालिक की मदद करने के बजाए जेब से रईस की दी हुई लिस्ट निकाली और दूर ही से उस को दिखा कर कहने लगा कि इस में येह कहीं नहीं लिखा कि अगर तुम्हारा पाऊं घोड़े की रिकाब में उलझ जाए तो इसे छुड़ाना मेरी ड्युटी है। येह सुन कर रईस नोकरों से किये हुए बुरे सुलूक पर पछताने लगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ रूहानी इलाज भी कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कीने से बचने के लिये बयान कर्दा मुआ़लजात के साथ साथ ह़स्बे तौफ़ीक़ अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ येह 7 **रूहानी इलाज** भी कीजिये :

﴾1﴿ जब भी दिल में **कीना** महसूस हो तो "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم" एक बार पढ़ने के बा'द उल्टे कंधे की त़रफ़ तीन पार थू थू कर दीजिये।

﴾2﴿ रोज़ाना दस बार "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم" पढ़ने वाले पर शैत़ान से ह़िफ़ाज़त करने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर देता है।

﴾3﴿ सूरतुल इख़्लास ग्यारह बार सुब्ह़ (आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ है) पढ़ने वाले पर अगर शैत़ान मअ़ लश्कर के कोशिश करे कि इस से गुनाह कराए तो न करा सके जब तक कि येह (पढ़ने वाला) ख़ुद न करे। (अल वज़ीफ़तुल करीमा, स. 21)

﴾4﴿ सूरतुन्नास पढ़ लेने से भी वस्वसे दूर होते हैं।

﴾5﴿ **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "**सूफ़ियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि जो कोई सुब्ह़ शाम इक्कीस इक्कीस बार "**लाह़ौल शरीफ़**" पानी पर दम कर के पी लिया करे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **वस्वसए शैत़ानी** से बहुत ह़द तक अम्न में रहेगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/87)

﴾6﴿ هُوَالْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ۝ (پ۲۷، الحدید:۳) कहने से फ़ौरन वस्वसा दूर हो जाता है।

की कषरत इसे (या'नी वस्वसे) को जड़ से क़त्अ़ कर (या'नी काट) देती है। (मुलख़्ख़सन अज़ फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, 1/770) (इस दुआ़ के हिस्सए आयत को आप की मा'लूमात के लिये मुनक़्क़श हिलालैन और रस्मुल ख़त़ की तब्दीली के ज़रीए़ वाज़ेह़ किया है)

(माख़ूज़ अज़ नेकी की दा'वत, स.104 ता 106)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

किसी को किसी से बुग़्ज़ व ह़सद न होगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ियामत से पहले एक वक़्त ऐसा भी आएगा जब किसी को किसी से **बुग़्ज़** व ह़सद न होगा, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर दगार ग़ैबों पर ख़बरदार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : ख़ुदा की क़सम ! इब्ने मरयम (या'नी ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام) उतरेंगे, ह़ाकिमे आ़दिल हो कर कि सलीब तोड़ देंगे और ख़िन्ज़ीर फ़ना कर देंगे, जिज़्या ख़त्म फ़रमा देंगे, ऊंटनियां आवारा छोड़ दी जाएंगी जिन पर काम काज न किया जावेगा और कीने, **बुग़्ज़** और ह़सद जाते रहेंगे, वोह माल की त़रफ़ बुलाएंगे तो कोई उसे क़बूल न करेगा।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، ص ۹۱، الحدیث:۲۴۳)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीषे पाक के इस हिस्से **"और कीने, बुग़्ज़ और ह़सद जाते रहेंगे"** के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْهِ السَّلَام की बरकत से लोगों के दिलों से ह़सद,

बुग़्ज़ (और) **कीने** निकल जाएंगे क्यूंकि किसी के दिल में दुन्या की महब्बत न रहेगी। हर एक को दीन व ईमान की लगन लग जाएगी। महब्बते दुन्या इन सब की जड़ है, जब जड़ ही कट गई तो शाखें कैसे रहें। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/339)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अहले जन्नत के दरमियान कीना नहीं होगा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अहले जन्नत की ता'रीफ़ इस त़रह फ़रमाई है :

وَ نَزَعْنَا مَا فِیْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِیْنَ ﴿۴۷﴾

(پ ۱۴، الحجر ۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम ने इन के सीनों में जो कुछ* ***कीने*** *थे सब खींच लिये आपस में भाई हैं तख़्तों पर रू बरू बैठे।*

रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

لَا اِخْتِلَافَ بَیْنَھُمْ وَلَا تَبَاغُضَ قُلُوْبُھُمْ قَلْبٌ وَاحِدٌ یُسَبِّحُوْنَ اللّٰہَ بُکْرَۃً وَّعَشِیًّا

या'नी अहले जन्नत में आपस में इख़्तिलाफ़ होगा न **बुग़्ज़** व कदूरत ! सब के दिल एक होंगे। सुब्ह़ो शाम **अल्लाह** की पाकी बयान करेंगे।

(صحیح البخاری،کتاب بدء الخلق باب ماجاء فی صفة الجنة وانها مخلوقة، ۲/۳۹۱،الحدیث۳۲۴۵)

कीना व ह़सद क्यूंकर बाक़ी रह सकता है !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जो कुलूब **अल्लाह** तआला की महब्बत से मालूफ़ और उस की महब्बत पर मुत्तफ़िक़ और उस की मुवद्दत पर मुज्तमअ़ और उस

के ज़िक्र से मानूस हो गए हैं उन में **कीना** और ह़सद किस त़रह़ बाक़ी रह सकता है, बेशक येह दिल नफ़्सानी वस्वसों और त़बई कदूरतों से पाक व साफ़ हैं बल्कि तौफ़ीक़ के नूर से रोशन हैं तो फिर वोह सब आपस में भाई भाई बन गए। (عوارف المعارف ص ٣٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कीने की मज़ीद सूरतें

अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किसी से **कीना** रखा मषलन कोई शख़्स कमज़ोरों पर ज़ुल्म ढाता है, क़त्लो ग़ारत करता है, लोगों को गुनाहों की राह पर चलाता है या वोह ग़ैर मुस्लिम या बद मज़हब है तो ऐसे से **कीना** रखना जाइज़ व महमूद है। इस बात को दर्जे ज़ैल रिवायात व ह़िकायात से समझने की कोशिश कीजिये, चुनान्चे

अफ़्ज़ल अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : اَفْضَلُ الْاَعْمَالِ الْحُبُّ فِی اللّٰهِ وَالْبُغْضُ فِی اللّٰهِ या'नी सब से बेहतर अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये दुश्मनी करना है।

(سنن أبی داؤد،کتاب السنة،باب مجانبة اهل الأهواء وبغضهم،٤/٢٦٤،الحدیث:٤٥٩٩)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत का मत़लब येह है कि किसी से इस लिये महब्बत की जाए कि वोह दीनदार है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़दावत का मत़लब येह है कि किसी से अ़दावत हो तो इस बिना पर हो कि वोह दीन का दुश्मन है या दीनदार नहीं। (نزهة القاری،١/٢٩٥)

कहीं हम ग़लत फ़हमी में न हों

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी से **बुग़्ज़** व **कीना** रखने से पहले ख़ूब अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लेना चाहिये कि क्या हम वाक़ेई जवाज़ी सूरत पर ही अ़मल कर रहे हैं ? कहीं हम ग़लत़ फ़हमी में तो मुब्तला नहीं ! इस बात को दर्जे ज़ैल रिवायत से समझने की कोशिश कीजिये :

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन वाषिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि (मह़बूबे रब्बे काइनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में) एक साह़िब किसी क़ौम के पास से गुज़रे तो उन्हों ने इन्हें सलाम किया, इन लोगों ने सलाम का जवाब दिया। जब वोह साह़िब वहां से तशरीफ़ ले गए तो इन में से एक शख़्स ने उन साह़िब के बारे में कहा : "मैं **अल्लाह** तआ़ला के लिये उस शख़्स से **बुग़्ज़** रखता हूं।" अहले मजलिस ने उस से कहा कि तुम ने बहुत बुरी बात की है। ब ख़ुदा ! हम उसे येह बात ज़रूर बाताएंगे, फिर एक आदमी से कहा कि ऐ फ़ुलां ! खड़ा हो और जा कर उसे येह बात बता दे, चुनान्चे क़ासिद ने उसे पा लिया और येह बात बता दी। वोह साह़िब वहां से पलट कर रसूले षक़लैन, सुल्त़ाने कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुसलमानों की एक मजलिस पर मेरा गुज़र हुवा, मैं ने उन्हें सलाम किया। उन में फ़ुलां आदमी भी था। उन सब ने मेरे सलाम का जवाब दिया। जब मैं आगे बढ़ गया तो इन में से एक आदमी मेरे पास आया और उस ने मुझे बताया कि फ़ुलां आदमी का येह कहना है कि मैं उस से بُغۡضٌ فِی اللّٰہ (या'नी **अल्लाह** तआ़ला के लिये **बुग़्ज़**) रखता हूं।

आप उसे बुला कर पूछिये कि वोह मुझ से किस बिना पर **बुग़्ज़** रखता है ? नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदमो बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे बुलवा कर इस बात के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने अपनी बात का ए'तिराफ़ कर लिया कि हां ! मैं ने येह बात कही है। इरशाद फ़रमाया : तुम इस से **बुग़्ज़** क्यूं रखते हो ? तो उस ने कहा : मैं इन का पड़ोसी हूं और मैं इन की **भलाई** का ख़्वाहा हूं, **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने कभी भी **फ़र्ज़ नमाज़** के इलावा इन्हें (नफ़्ल) नमाज़ पढ़ते हुए नहीं देखा, जब कि फ़र्ज़ नमाज़ तो हर नेक व बद पढ़ता है। फ़रयादी साहिब ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इन से पूछिये, क्या इन्हों ने मुझे फ़र्ज़ नमाज़ में **ताख़ीर** करते हुए देखा है ? या मैं ने **वुज़ू** में कोई कोताही की है ? या **रुकूअ़ व सुजूद** में कोई कमी की है ? आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा तो उन्हों ने इन्कार करते हुए अ़र्ज़ की : मैं ने इन में ऐसी कोई बात नहीं देखी। फिर मज़ीद अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने इन को रमज़ानुल मुबारक के इलावा कभी (नफ़्ली) **रोज़े** रखते हुए नहीं देखा, इस महीने (या'नी माहे रमज़ानुल मुबारक) का **रोज़ा** तो हर नेक व बद रखता है। येह सुन कर फ़रयादी ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इन से पूछिये, क्या मैं ने कभी रमज़ानुल मुबारक में **रोज़ा** छोड़ा है ? या रोज़े के हक़ में कोई कमी की है ? पूछने पर उन्हों ने अ़र्ज़ की : नहीं। फिर कहा : **अल्लाह** तआ़ला की क़सम ! मैं ने नहीं देखा कि इन साहिब ने **ज़कात** के इलावा किसी मिस्कीन या साइल को कुछ दिया हो या **अल्लाह**

तआ़ला के रास्ते में ख़र्च किया हो, **ज़कात** तो हर नेक व बद अदा करता है। फ़रयादी ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इन से पूछिये, क्या इन्हों ने मुझे ज़कात की अदाएगी में **कोताही** करते हुए देखा है ? या मैं ने कभी इस में टालम टोल से काम लिया है ? दरयाफ़्त करने पर उन्हों ने अ़र्ज़ की : नहीं। **हुज़ूरे** पुरनूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस (**बुग़्ज़** रखने वाले) से फ़रमाया : قُمْ اِنْ اَدْرِیْ لَعَلَّهٗ خَیْرٌ مِنْكَ उठ जाओ, मैं नहीं जानता शायद येही तुम से बेहतर हो। (مُسند اِمام احمد، ۹/ ۲۱۰، الحدیث ۲۳۸٦٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या मेरे महबूबों से महब्बत और मेरे दुश्मनों से अ़दावत भी रखी ?

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन एक ऐसे शख़्स को लाया जाएगा जो ख़ुद को नेक समझता होगा और उसे येह गुमान होगा कि मेरे नामए आ'माल में कोई गुनाह नहीं है। उस से पूछा जाएगा : क्या तू मेरे दोस्तों से दोस्ती रखता था ? वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू तो लोगों से सालिम व महफ़ूज़ (या'नी बे नियाज़) है। फिर रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : क्या तू मेरे दुश्मनों से अ़दावत रखता था ? तो वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे मालिको मुख़्तार عَزَّوَجَلَّ मैं येह पसन्द नहीं करता था कि मेरे और किसी के दरमियान कुछ हो, तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाएगा :

لَا یَنَالُ رَحْمَتِیْ مَنْ لَمْ یُوَالِ اَوْلِیَائِیْ وَیُعَادِیْ اَعْدَائِیْ

या'नी वोह मेरी रह़मत को नहीं पा सकेगा जिस ने मेरे दोस्तों के साथ दोस्ती और मेरे दुश्मनों के साथ अ़दावत न रखी।

(المعجم الكبير، باب الواو، ٢٢/٥٩، الحديث: ١٤٠)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बद मज़हब को खाना नहीं खिलाया

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ नमाज़े मग़रिब पढ़ कर मस्जिद से तशरीफ़ लाए थे कि एक शख़्स ने आवाज़ दी : "कौन है कि मुसाफ़िर को खाना दे ?" अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ख़ादिम से इरशाद फ़रमाया : "इसे हमराह ले आओ।" वोह आया तो उसे खाना मंगा कर दिया। मुसाफ़िर ने खाना शुरूअ़ ही किया था कि एक लफ़्ज़ उस की ज़बान से ऐसा निकला जिस से बद मज़हबी की बू आती थी, फ़ौरन खाना सामने से उठवा लिया और उसे निकाल दिया।

(كنز العمال، كتاب العلم، قسم الافعال، ١٠/١١٧، الحديث ٢٩٣٨٤، ملخصًا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जब एक ग़ैर मुस्लिम ने आ'ला ह़ज़रत के जिस्म पर हाथ रखा

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मल्फ़ूज़ात शरीफ़ में फ़रमाते हैं : हर मुसलमान पर फ़र्ज़े आ'ज़म है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सब दोस्तों (या'नी नबियों, सह़ाबियों और

वलियों वग़ैरा) से महब्बत रखे और उस के सब दुश्मनों (या'नी काफ़िरों, बद मज़हबों, बे दीनों और मुर्तदों) से अ़दावत रखे। येह हमारा ऐन ईमान है। ﴿इसी तज़किरे में फ़रमाया﴾ بِحَمْدِ اللّٰہ تَعَالٰی मैं ने जब से होश संभाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सब दुश्मनों से दिल में सख़्त नफ़रत ही पाई। एक बार अपने दिहात (देहात) को गया था, कोई देही मुक़द्दमा पेश आया जिस में चोपाल के तमाम मुलाज़िमों को बदायूं जाना पड़ा, मैं तन्हा रहा। उस ज़माने में مَعَاذَاللّٰہ दर्दे कूलन्ज (या'नी बड़ी अंतड़ी का दर्द) के दौरे हुवा करते थे। उस दिन ज़ोहर के वक़्त से दर्द शुरूअ़ हुवा, इसी ह़ालत में जिस त़रह़ बना, वुज़ू किया। अब नमाज़ को नहीं खड़ा हुवा जाता। रब्ब عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मदद मांगी। मौला عَزَّوَجَلَّ मुज़्त़र (या'नी परेशान) की पुकार सुनता है। मैं ने सुन्नतों की निय्यत बांधी, दर्द बिलकुल न था। जब सलाम फैरा, उसी शिद्दत से था। फ़ौरन उठ कर फ़र्ज़ों की निय्यत बांधी, दर्द जाता रहा। जब सलाम फैरा वोही ह़ालत थी। बा'द की सुन्नतें पढ़ीं, दर्द मौक़ूफ़ (या'नी ख़त्म) और सलाम के बा'द फिर बदस्तूर, मैं ने कहा : अब अ़स्र तक होता रह। पलंग पर लैटा करवटें ले रहा था कि दर्द से किसी पहलू क़रार न था। इतने में सामने से उसी ग़ाऊं का एक ब्राहमन गुज़रा, फाटक खुला हुवा था, मुझे देख कर अन्दर आया और मेरे पेट पर हाथ रख कर पूछा क्या यहां दर्द है? मुझे उस का नजिस हाथ बदन को लगने से इतनी कराहत व नफ़रत पैदा हुई कि दर्द को भूल गया और येह तक्लीफ़ इस से बढ़ कर मा'लूम हुई कि एक काफ़िर का हाथ मेरे पेट पर है। **ऐसी अ़दावत रखना चाहिये।** (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 276, बित्तसर्रुफ़)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बद मज़हबों की सोहबत ईमान के लिये ज़हरे क़ातिल है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ 504 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" के सफ़्हा 63 पर है : बद मज़्हबों की सोहबत ईमान के लिये ज़हरे क़ातिल है, उन से दोस्ती और तअ़ल्लुक़ात रखने की अहादीषे मुबारका में मुमानअ़त है। चुनान्चे सुल्ताने अ़रब, महबूबे रब्ब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जो किसी बद मज़्हब को सलाम करे या उस से ब कुशादा पेशानी मिले या ऐसी बात के साथ उस से पेश आए जिस में उस का दिल खुश हो, उस ने उस चीज़ की तह़क़ीर की जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **मुहम्मद** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर उतारी।" (تاريخ بغداد،١٠/٢٦٢)

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, महबूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल पज़ीर है : "जिस ने किसी **बद मज़्हब** की (ता'ज़ीम व) तौक़ीर की उस ने दीन के ढा देने पर मदद दी।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط، ٥/١١٨،الحديث ٦٧٧٢)

रहमते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : तुम उन से दूर रहो और वोह तुम से दूर रहें, कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें और फ़ितने में न डाल दें।

(مُقدّمه صَحيح مُسلِم ص٩ حديث ٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बद मज़हबों से दीन या दुन्यावी ता'लीम न ली जाए

बद मज़हब से दीनी या दुन्यावी ता'लीम लेने की मुमानअ़त करते हुए **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ग़ैर मज़हब वालियों (या वालों) की सोह़बत आग है, ज़ी इ़ल्म आ़क़िल बालिग़ मर्दों के मज़हब (भी) इस में बिगड़ गए हैं। **इमरान बिन ह़त़ान रक़्क़ाशी का क़िस्सा मश्हूर है, येह ताबेईन के ज़माने में एक बड़ा मुब्तदिअ़ था, ख़ारिजी मज़हब की औ़रत की सोह़बत में (रह कर) مَعَاذَاللّٰہِ ख़ुद ख़ारिजी हो गया और येह दा'वा किया था कि (उस से शादी कर के) उसे सुन्नी करना चाहता है।** (यहां वोह नादान लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो बज़ो'मे फ़ासिद ख़ुद को बहुत "पक्का सुन्नी" तसव्वुर करते और कहते सुनाई देते हैं कि हमें अपने मस्लक से कोई हिला नहीं सकता, हम बहुत ही मज़बूत़ हैं !) **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْه **मज़ीद फ़रमाते हैं : जब सोह़बत की येह ह़ालत (कि इतना बड़ा मुब्तदिअ़ गुमराह हो गया) तो (बद मज़हब को) उस्ताद बनाना किस दर्जे बद तर है कि उस्ताद का अषर बहुत अ़ज़ीम और निहायत जल्द होता है, तो ग़ैर मज़हब औ़रत (या मर्द) की सिपुर्दगी या शागिर्दी में अपने बच्चों को वोही देगा जो आप (ख़ुद ही) दीन से वासित़ा नहीं रखता और अपने बच्चों के बददीन हो जाने की परवाह नहीं रखता।** (फ़तावा रज़विय्या, 23/692 मुल्तक़त़न)

महफ़ूज़ ख़ुदा रखना सदा बे अदबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुलासए किताब

★ **कीना** मोहलिक बातिनी मरज़ है और इस के बारे में जानना फ़र्ज़ है

★ **कीना** येह है कि इन्सान अपने दिल में किसी को बोझ जाने, उस से दुश्मनी व **बुग़्ज़** रखे, नफ़रत करे और येह कैफ़िय्यत हमेशा हमेशा बाक़ी रहे

★ किसी मुसलमान से बिला वजहे शरई **कीना** रखना ह़राम है

★ किसी ज़ालिम से **कीना** रखना जाइज़ जब कि बद मज़हब व काफ़िर से **कीना** रखना वाजिब है।

कीना रखने वाले को इन नुक़्सानात का सामना होगा

(1) दोज़ख़ में दाख़िला (2) बख़्शिश से महरूमी (3) शबे क़द्र में भी महरूम रहता है (4) जन्नत की ख़ुश्बू भी न पाएगा (5) ईमान बरबाद होने का ख़त़रा है (6) दुआ क़बूल नहीं होती (7) दीगर गुनाहों का दरवाज़ा खुल जाता है (8) उसे सुकून नसीब नहीं होता (9) सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सादाते उ़ज़्ज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم उ़-लमाए किराम और अ़रबों से **बुग़्ज़** व **कीना** रखना ज़ियादा बुरा है।

कीने का इलाज

(1) ईमान वालों के **कीने** से बचने की दुआ कीजिये

(2) **कीने** के अस्बाब (ग़ुस्सा, बद गुमानी, शराब नोशी, जूआ वग़ैरा) दूर कीजिये

(3) सलाम व मुसाफ़ह़ा की आ़दत बना लीजिये

(4) बे जा सोचना छोड़ दीजिये

(5) मुसलमानों से **अल्लाह** की रिज़ा के लिये महब्बत कीजिये

(6) दुन्यावी चीज़ों की वजह से **बुग़्ज़** व **कीना** रखने के नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये ।

दूसरों को अपने कीने से बचाने के त़रीक़े

(1) किसी की बात काटने से बचिये

(2) किसी की ग़लती निकालने में एह़तियात़ कीजिये

(3) मौक़अ़ महल के मुत़ाबिक़ अ़मल कीजिये

(4) मश्वरा **बुग़्ज़** व **कीने** को काफ़ूर करता है

(5) किसी की इस्लाह़ करने का अन्दाज़ महब्बत भरा होना चाहिये

(6) रिश्ते पर रिश्ता न भेजिये

(7) ख़्वाह मख़्वाह हौसला शिकनी न कीजिये

(8) दूसरों को न झाड़िये

(9) रूह़ानी इलाज भी कीजिये

तफ़्सील के लिये रिसाले का फिर से मुत़ालआ़ कीजिये

मदनी इल्तिजा

रिसाला "**बुग़्ज़** व **कीना**" को पढ़ने और फ़ाइदा उठाने वाले तमाम इस्लामी भाइयों की ख़िदमत में इस के मुअल्लिफ़ व मुआ़विनीन के लिये बे हिसाब मग़्फ़िरत व आ़फ़िय्यत की दुआ़ की दरख़्वास्त है ।

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
दुरूदो सलाम की फ़ज़ीलत	1	सादात से बुग़्ज़ रखने वाले को हौज़े कौषर पर चाबुक मारे जाएंगे	24
क़ब्र काले सांपों से भरी हुई थी	2	अहले बैत का दुश्मन दोज़ख़ी है	24
बातिनी गुनाहों का इलाज बेहद ज़रूरी है	3	अरबों से बुग़्ज़ व कदूरत रखने वाला शफ़ाअत से महरूम	25
कीना किसे कहते हैं?	5	जिस ने अरबों से बुग़्ज़ रखा उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा	25
मुसलमान से कीना रखने का शरई हुक्म	5	अरब से बुग़्ज़ कब कुफ़्र है?	25
कीने की हलाकत खेज़ियां	6	तीन वुजूह की बिना पर अरब से महब्बत रखो	26
पिछली उम्मतों की बीमारी	7	क्या कुफ़्फ़ारे अरब से भी महब्बत रखनी होगी?	26
कीने के नुक़्सानात	8	अहले अरब अरबी आक़ा के हम क़ौम हैं	27
चुगुल ख़ोरी और कीना परवरी दोज़ख़ में ले जाएंगे	8	इल्म और आलिम से बुग़्ज़ रखने वाला न बन कि हलाक हो जाएगा	27
बख़्शिश नहीं होती	9	आलिमे दीन से ख़्वाह मख़्वाह बुग़्ज़ रखने वाला मरीजुल क़ल्ब और ख़बीषुल बातिन है	28
रहमत व मग़फ़िरत से महरूमी	10	यहूदी मुआलिज का इमाम माज़री के साथ कीना व हसद	29
नाज़ुक फ़ैसलों की रात	10	औलियाए किराम से बुग़्ज़ रखने वाले की तौबा	29
जन्नत की खुश्बू भी न पाएगा	11	मामूं की इनफ़िरादी कोशिश	32
ईमान बरबाद होने का ख़तरा	11	तुम्हारे दिल में किसी के लिये कीना व बुग़्ज़ न हो	34
दुआ क़बूल नहीं होती	12	अफ़्ज़ल कौन?	34
दीनदारी न होना	13	जन्नती आदमी	35
दीगर गुनाहों का दरवाज़ा खुल जाता है	13	जिस्म के साथ साथ दिल भी सुथरा रखना ज़रूरी है	36
कीना परवर बे सुकून रहता है	15	मैं तुम्हारे पास साफ़ सीना आया करूं	38
मुआशरे का सुकून बरबाद हो जाता है	15	अपने दिल पर ग़ौर कर लीजिये	39
तुम लोग भाई-भाई बन कर रहो	16	"राहे जन्नत" के 6 हुरूफ़ की निस्बत से कीने के 6 इलाज	40
मुसलमान तो एक दूसरे के मुहाफ़िज़ होते हैं	16		
गोशा नशीनी की वजह	17		
ज़िन्दगी का रुख़ बदल गया	18		
बदतरीन बुग़्ज़ व कीना	21		
सहाबए किराम से बुग़्ज़ रखने की वईदे शदीद	21		
सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से बुग़्ज़ व अदावत रखने वाले का भयानक अन्जाम	22		

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
ईमान वालों के कीने से बचने की दुआ़ कीजिये	40	(5) मश्वरा बुग़्ज़ व कीने को काफ़ूर करता है	63
अस्बाब दूर कीजिये	40	(6) किसी की इस्लाह़ करने का अन्दाज़ मह़ब्बत भरा होना चाहिये	63
पहला सबब : गुस्सा	40	(7) रिश्ते पर रिश्ता न भेजिये	64
गुस्सा पीने वाले के लिये जन्नती हूर	41	(8) ख़्वाह मख़्वाह हौसला शिकनी न कीजिये	65
दूसरा सबब : बद गुमानी	42	(9) दूसरों को न झाड़िये	66
तीसरा सबब : शराब नोशी और जूआ	42	दूर ही से शराइत़ दिखाने वाला नोकर	66
चौथा सबब : ने'मतों की कषरत	44	(10) रूह़ानी इलाज भी कीजिये	67
बुग़्ज़ व अ़दावत में पड़ जाओगे	44	किसी को किसी से बुग़्ज़ व ह़सद न होगा	68
आपस में बुग़्ज़ व अ़दावत जड़ पकड़ लेती है	46	अहले जन्नत के दरमियान कीना नहीं होगा	69
सलाम व मुसाफ़ह़ा की आ़दत बना लीजिये	46	कीना व ह़सद क्यूंकर बाक़ी रह सकता है !	69
बेजा सोचना छोड़ दीजिये	47	कीने की मज़ीद सूरतें	70
मुसलमानों से अल्लाह की रिज़ा के लिये मह़ब्बत कीजिये	48	अफ़्ज़ल अ़मल	70
दुन्यावी चीज़ों की वजह से बुग़्ज़ व कीना रखना अ़क्लमन्दी नहीं	48	कहीं हम ग़लत़ फ़हमी में न हों	71
अपने बच्चों को भी बुग़्ज़ व कीने से बचाइये	50	क्या मेरे मह़बूबों से मह़ब्बत और मेरे दुश्मनों से अ़दावत भी रखी ?	73
छोटी बहन को क़त्ल कर डाला	51	बद मज़्हब से बुग़्ज़ व अ़दावत रखें और उस की तज़्लील व तह़क़ीर बजा लाए	74
अगर कोई हम से कीना रखता हो तो क्या करना चाहिये ?	52	बद मज़्हब को खाना नहीं खिलाया	74
फ़त्ह़े मक्का के दिन आ़म मुआ़फ़ी का ए'लान कर दिया	53	जब एक ग़ैर मुस्लिम ने आ'ला ह़ज़रत के जिस्म पर हाथ रखा	75
बुग़्ज़ व इनाद मह़ब्बत में बदल गया	57	बद मज़्हबों की सोह़बत ईमान के लिये ज़ह्रे क़ातिल है	76
बुग़्ज़ व इनाद रखने वाला यहूदी कैसे मुसलमान हुवा	58	बद मज़्हबों से दीनी या दुन्यावी ता'लीम न ली जाए	77
मुझे आप से बुग़्ज़ था	60	ख़ुलासए किताब	78
कीना रखने वाले से भी फ़ाइदा ह़ासिल किया जा सकता है	61	कीना रखने वाले को इन नुक़्सानात का सामना होगा	78
दूसरों को अपने कीने से बचाने के त़रीक़े	62	कीने का इलाज	79
(1) किसी की बात काटने से बचिये	62	दूसरों को अपने कीने से बचाने के त़रीक़े	79
(2) ता'ज़िय्यत के दौरान मुस्कुराने से बचिये	62	माख़ज़ो मराजेअ़	82
(3) किसी की ग़लत़ी निकालने में एह़तियात़ कीजिये	62	सलाम के 11 मदनी फूल	85
(4) मौक़अ़ मह़ल के मुताबिक़ अ़मल कीजिये	63		

ماٰخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
ترجمۂ قرآن کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
تفسیر الدر المنثور	امام جلال الدین عبدالرحمن بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
تفسیر خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابوالحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابن ماجہ	امام ابوعبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
سنن ابی داؤد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث بیروت ۱۴۲۱ھ
الموطا	امام مالک بن انس، متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
المسند	امام احمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
المستدرک	امام ابوعبداللہ محمد حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
المصنف	امام ابوبکر عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبۃ، متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
موسوعۃ ابن ابی الدنیا	حافظ امام ابوبکر عبداللہ بن محمد قرشی، متوفی ۲۸۱ھ	مکتبۃ العصریۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
حلیۃ الاولیاء	امام ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
کنز العمال	امام علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
الزھد	امام ہناد بن السری الکوفی، متوفی ۲۳۴ھ	دار الخلفاء للکتاب الاسلامی الکویت ۱۴۰۶ھ
فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرؤف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
اشعۃ اللمعات	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ ۱۳۳۲ھ
مراٰۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز لاہور
نزھۃ القاری	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	فرید بک اسٹال لاہور ۱۴۲۱ھ
خلاصۃ الفتاوی	علامہ طاہر بن عبدالرشید بخاری، متوفی ۵۴۲ھ	کوئٹہ

فتاویٰ رضویہ (مخرجہ)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور ۱۴۱۸ھ
بہارِ شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
جنتی زیور	علامہ عبد المصطفی اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
شرح الزرقانی	امام محمد بن عبد الباقی زرقانی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
تاریخ بغداد	حافظ ابوبکر احمد علی بن خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
شواہد النبوۃ	امام عبد الرحمن بن احمد الجامی، متوفی ۸۹۸ھ	مکتبۃ الحقیقۃ استنبول ۱۴۱۵ھ
سیرتِ مصطفیٰ	علامہ عبد المصطفی اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
منہاج العابدین	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی، متوفی ۵۰۵ھ	تہران، ایران
درۃ الناصحین	امام عثمان بن حسن، متوفی ۱۲۴۲ھ	دار الفکر بیروت
تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفی ۳۷۳ھ	پشاور ۱۴۲۰ھ
تنبیہ المغترین	امام عبد الوہاب بن احمد الشعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
عوارف المعارف	ابو حفص عمر بن محمد سہروردی شافعی، متوفی ۶۳۲ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
روض الریاحین	امام عبد اللہ بن اسعد الیافعی، متوفی ۷۶۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
تذکرۃ الاولیاء	شیخ فرید الدین عطار، متوفی ۶۳۷ھ	انتشارات گنجینہ تہران ۱۳۷۹ھ
احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء
مجموعہ رسائل امام غزالی	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۴ھ
الحدیقۃ الندیۃ شرح الطریقۃ المحمدیۃ والسیرۃ الاحمدیۃ	ماتن: الشیخ زین الدین محمد بن بیر علی البرکلی، متوفی ۹۸۱ھ شارح: الشیخ عبد الغنی بن اسماعیل النابلسی، متوفی ۱۱۴۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۲ھ
مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
الملفوظ (ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت)	شہزادۂ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
الوظیفۃ الکریمۃ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
غیبت کی تباہ کاریاں	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
نیکی کی دعوت	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
خودکشی کا علاج	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
حیاۃ الحیوان الکبریٰ	کمال الدین محمد بن موسیٰ دمیری، متوفی ۸۰۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۵ھ
مدنی کاموں کی تقسیم	المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
حدائقِ بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
وسائلِ بخشش	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ

मिस्वाक की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है, تَسَوَّکُوْا فَاِنَّ السِّوَاکَ مَطْھَرَۃٌ لِّلْفَمِ مَرْضَاۃٌ لِلرَّب या'नी मिस्वाक करो क्यूंकि मिस्वाक मुंह की पाकीज़गी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी का सबब है।

(سنن ابن ماجه، کتاب الطهارة و سننها، باب السواك، الحديث ۲۸۹، ج ۱، ص ۱۸۶)

रोज़ी का एक सबब

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी के दौरे अक़्दस में दो भाई थे, जिन में एक कसब (काम काज) करते और दूसरे आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में (इल्मे दीन सीखने के लिये) हाज़िर होते। (एक रोज़) कमाने वाले भाई ने सरकार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अपने भाई की शिकायत की (या'नी इस ने सारा बोझ मुझ पर डाल दिया है। इस को मेरे काम काज में हाथ बटाना चाहिये) तो मदीने के सुल्तान, रह़मते आ-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَعَلَّکَ تُرْزَقُ بِہٖ "क्या अजब कि तुझे इस की ब-र-कत से रिज़्क़ मिले"

(فیضان سنت، ج۱، ص۱۴۲۲ بحواله سنن الترمذی، حدیث:۲۳۴۵،
ص۱۸۸۷ و اشعة اللمعات، ج۴، ص۲۶۲)

सलाम के 11 मदनी फूल

﴾1﴿ मुसलमान से मुलाक़ात करते वक़्त उसे सलाम करना सुन्नत है । ﴾2﴿ बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, सफ़ह़ा 102 पर लिखे हुए जुज़इये का खुलासा है : "सलाम करते वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि जिस को सलाम करने लगा हूं इस का माल और इ़ज़्ज़तो आबरू सब कुछ मेरी हिफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना ह़राम जानता हूं।" ﴾3﴿.... दिन में कितनी ही बार मुलाक़ात हो, एक कमरे से दूसरे कमरे में बार बार आना जाना हो वहां मौजूद मुसलमानों को सलाम करना कारे षवाब है । (سُنَنِ ابی داوٗد، ص۸۱۰، الحدیث:۵۲۰۰) ﴾4﴿.... सलाम में पहल करना सुन्नत है । (المرجعُ السَّابِق، الحدیث:۵۱۹۷) ﴾5﴿.... सलाम में पहल करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब है । (المَرْجَعُ السَّابِق) ﴾6﴿.... सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से भी बरी है । जैसा कि मेरे मक्की मदनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : पहले सलाम कहने वाला तकब्बुर से बरी है । (شُعَبُ الْاِیْمَان، ج۶، ص۴۳۳، الحدیث:۸۷۸۶) ﴾7﴿.... सलाम (में पहल) करने वाले पर 90 रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं । (شُعَبُ الْاِیْمَان، ج۶، ص۲۵۳، الحدیث:۸۰۵۲) ﴾8﴿.... اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ कहने से 10 नेकियां मिलती हैं । साथ में وَرَحْمَةُ اللّٰه भी कहेंगे तो 20 नेकियां हो जाएंगी और وَبَرَکَاتُهٗ शामिल करेंगे तो 30 नेकियां हो जाएंगी । (المُعْجَمُ الکَبِیْر، ج۳، ص۴۳۳، الحدیث: ۵۴۲۹) ﴾9﴿.... इसी त़रह़ जवाब में وَعَلَیْکُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُهٗ कह कर 30 नेकियां ह़ासिल की जा सकती हैं । ﴾10﴿.... सलाम का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि सलाम करने वाला सुन ले । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, स. 103 ता 107) ﴾11﴿.... सलाम और जवाबे सलाम का दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ याद फ़रमा लीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ (اَس۔سَلا۔مُ ۔ عَلَے۔کُمْ)وَعَلَیْکُمُ السَّلَام (وَ۔عَ۔لَیکُ۔مُس۔سَلام)

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी इन्आमात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना
सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अहमदाबाद-1, गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409
Web : www.dawateislami.net / E-mail:maktabahmedabad@gmail.com

مکتبۃ المدینہ
(دعوت اسلامی)
MC 1286